

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15

अंक-9

अगस्त-I, 2014

पाक्षिक

माउण्ट आबू

₹ 8.00

महिलाएं अपने आप में सर्वसमर्थ

त्रिदिवसीय सम्मेलन में विभिन्न विषयों पर खुले व चर्चा सत्र का आयोजन किया गया

ज्ञानसरोवर-माउण्ट आबू। हिंसामुक्त समाज निर्माण में भागीदारी सुनिश्चित करने में महिलाओं को प्राथमिकता से आगे जाने की नितांत आवश्यकता है। महिलाएं अपने आप में सर्वसमर्थ हैं, उन्हें किसी बैसाखी की आवश्यकता नहीं है।

उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज के महिला सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन में गुजरात महिला आयोग की अध्यक्ष लीला बेन अनकोटिया ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि महिलाओं को अपने शक्ति-स्वरूप को पहचान कर पारिवारिक व सामाजिक रिश्तों से समाप्त होते मूल्यों को फिर से विकसित करने में आगे जाना चाहिए।

ज्ञानसरोवर निर्देशिका डॉ. निर्मला ने कहा कि नैतिक मूल्यों का विकास करने में महिलाओं को अपना मानसिक धरातल आध्यात्मिकता से भरपूर रखना चाहिए। जीवन व्यवहार को संतुष्टता व प्रसन्नता से भरपूर रखने के लिए

मेडिटेशन का अभ्यास अति आवश्यक है। पंजाब महिला आयोग अध्यक्ष श्रीमती परमजीत कौर ने कहा कि समाज को सफलता की मंजिल पर पहुंचाने एवं महान समाज की सुदृढ़ नींव डालने में महिलाएं सक्षम हैं, बशर्ते वे अपने अंतर्निहित शक्तियों को जागृत कर कार्य में लगाएं। ब्रह्माकुमारी संगठन द्वारा विश्व भर में किए जा रहे सार्थक प्रयास सराहनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी हैं।

पद्मविभूषण से सम्मानित प्रसिद्ध नृत्यांगना डॉ. सोनल मानसिंह ने कहा कि किसी हथियार से वार करने से सशक्तिकरण नहीं लाया जा सकता, उसके लिए शिक्षा व संस्कार सर्वाधिक अचूक हथियार हैं। मूल्यों से संपन्न शिक्षा किसी भी बुराई को धराशायी करने में सर्वसमर्थ है।

प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा ब्र.कु. चक्रधारी ने कहा कि वर्तमान परिवेश में बच्चे माँ-बाप के आचरण से ज़्यादा



ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए सोनल मानसिंह, ब्र.कु. डॉ. निर्मला, ब्र.कु. चक्रधारी, परमजीत कौर, लीला अनकोटिया, मेधा शिंदे, ब्र.कु. डॉ. सविता तथा अन्य।

सोखते हैं शिक्षा से कम। जितना जोर बच्चों पर शिक्षा की डिग्री लेने के लिए लगाया जाता है, उतना ही संस्कारों को श्रेष्ठ बनाने के लिए महत्व देना चाहिए। श्रीमती मेधा शिंदे, मुख्य अभियंता, मुंबई

ने कहा कि घर के माहौल को श्रेष्ठ बनाने के लिए महिलाओं को व्यर्थ की बातों को छोड़ जनहित के लिए अपनी आंतरिक क्षमताओं को बढ़ाने का मनन-चिंतन करना चाहिए। प्रभाग की

मुख्यालय संयोजिका डॉ. सविता ने कार्यक्रम का संचालन किया। त्रिदिवसीय सम्मेलन में कई विषयों पर चर्चा सत्र का आयोजन किया गया।

राजयोग से स्वयं का निरीक्षण कर आत्मिक शक्तियों का विकास करें

ओ.आर.सी। हम सभी ओम् शान्ति को बोलते हैं लेकिन ओम्, उ, म, तीन अक्षरों का मिलन है, जिसमें अ का अर्थ आचरण, उ अर्थात् उच्चारण और म माना मेरा मन, जब हम इन तीनों शब्दों के अर्थ स्वरूप में टिककर ओम् शान्ति कहते हैं तभी शान्ति की सच्ची अनुभूति होती है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'स्मिच्युअल टूल्स टू मैनेज स्ट्रेस' विषय पर पुलिस कर्मियों के लिए आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. आशा, निर्देशिका ओ.आर.सी. ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि तनावमुक्त रहने

के लिए सबसे पहले ज़रूरी है कि जो बात जैसी है हम उसको वैसा ही समझें, कई बार हमें अपने व्यक्तित्व झुकाव व एडिक्शन के कारण वो चीज़ वैसी नजर नहीं आती।

दूसरा, बाहर की परिस्थितियों में अपनी शक्ति से ज़्यादा शक्तिशाली नजर आती हैं। इसके लिए जरूरी है कि हम स्वयं के भीतर जाकर अपनी आंतरिक क्षमताओं को पहचानें, उसके लिए एकग्रता की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। राजयोग हमें सिखाता है कि स्वयं का निरीक्षण कर कैसे हम अपनी आत्मिक

शक्तियों का विकास करें। उन्होंने कहा कि हम तभी दूसरों की सुरक्षा कर सकते हैं, जब स्वयं सुरक्षित हों। स्वयं की सुरक्षा केवल हथियारों से नहीं बल्कि इमानदारी, निर्भयता, सद्भावना एवं कर्तव्यनिष्ठता जैसे गुणों को अपने जीवन में लाने से होती है।

डॉ. बी.एन. रमेश, आइ.जी., सी. आर.पी.एफ., गुडगांव ने कहा कि पुलिस की समाज में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है, तभी लोग आपके पास तभी लोग आते हैं इसलिए हमें लोगों को निष्ठा को समझकर जनहित में कार्य करना है।

उन्होंने कहा कि पुलिस का ये दायित्व है कि वो किसी छोटे अपराधी को बहुत बड़ा अपराधी न बनने दें। उन्होंने आगे कहा कि मनुष्य जैसे कर्म करता एवं जैसा भोजन खाता है वैसे ही बन जाता है। मैं तीन-चार महीने माउण्ट आबू में रहा ब्रह्माकुमारीज में कई बार गया, इनके रसोईघर में भोजन जितनी पवित्रता से बनाया जाता है, ये उसी का परिणाम है कि यहाँ का वातावरण इतना आध्यात्मिक एवं शक्तिशाली है।

संस्था के मुख्य सचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज का मुख्य

उद्देश्य ही है ह्यूमन बिंस को बेस्ट ह्यूमन बिंस बनाना।

उन्होंने कहा कि तनाव के बहुत से कारण हैं, लेकिन उसका निवारण हमारे मन के अन्दर ही है। परिस्थितियां तो बाहर से आती हैं, परन्तु यदि हम अपने मन को सकारात्मक चिन्तन द्वारा शक्तिशाली बना दें, तो परिस्थितियों का सामना करना आसान हो जाता है। उन्होंने कहा कि इस दुनिया में कोई भी चीज़ अपने लिए नहीं बनी है, प्रकृति भी हमें देती है। हमारे जीवन का लक्ष्य भी यही हो कि पहले देना है, जो हम देते हैं, वो- शेष पेज 7 पर



ओ.आर. सी। कैडल लाइटिंग करते हुए रेवाड़ी के ए.सी.पी., ब्र.कु. शुक्ला, ब्र.कु. नरेन्द्र, ब्र.कु. बृजमोहन, डॉ. बी.रमेश एवं गुडगांव की ए.सी.पी.।

गतांक से आगे....

हरेक व्यक्ति इस संसार में सामाजिक प्राणी होने के नाते उसके संबंध हैं। जब कोई जन्म ही लेता है तो कुछ संबंध तो उसके जन्म से ही शुरू हो जाते हैं। जब मनुष्य जन्म लेता है तो माता-पिता उसके संबंधी हो जाते हैं। कोई व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि जन्म से लेकर मेरा किसी से कोई संबंध नहीं है क्योंकि जब भी जन्म लिया तो माता-पिता से ही जन्म लिया और कोई संबंध न भी हो तो माता-पिता से तो है ही। मनुष्य का प्यार भी किसी न किसी संबंध पर केन्द्रित होता है। प्यार किसी न किसी से संलग्न होता है, जुटा होता है उसे हम अलग करके नहीं रख सकते। बिना संबंध के प्यार अपने आप में कोई चीज नहीं है। परमात्मा के साथ हमारा प्यार होना है तो सबसे पहले हम देखेंगे कि परमात्मा के साथ हमारा संबंध क्या है। हमने सारे संबंध शरीरधारियों से जोड़ लिये हैं, हमारा सारा प्यार वहीं समाप्त हो गया है। उसी का कारण है कि परमात्मा की याद हमें आती नहीं, उसपर हम हमारा टिकता नहीं क्योंकि मनुष्य का ध्यान वहाँ जाता है जहाँ उसका प्यार हो। जब हमारा प्यार सभी देह के संबंधों से छूट जाता है और उस परमात्मा से सर्व संबंधों की भावना उजागर होती है तब हमारा योग ठीक लगता है। ये सभी योग लगाने के साधन हैं, इन्हीं कारणों से इस योग को सहज योग कहा जाता है।

जब हम मन को एकाग्र करते हैं तो हम जानते हैं इस दुनिया में हर चीज परिवर्तनीय है और जब इस परिवर्तनशील संसार पर हम मन लगाते हैं तो वो मन कैसे स्थिर होगा जबकि ये सारी चीजें ही हिलने वाली हैं। इसलिए इस योग में जो मन को स्थिर करने की बात की जाती है वो इस संसार से पार, सूर्य, चाँद तारागण, से भी पार जो ब्रह्मत्व में परमपिता परमात्मा ज्योतिर्बिंदु है जो अपरिवर्तनीय हैं वहाँ पर जब हम मन को एकाग्र करते हैं तो सही मायने में एकाग्रता होती है। इस योग का परिचय देते हुए परमात्मा ने बताया है कि लगन में मग्न होना ही योग है। जब उस परमपिता परमात्मा से हमारा अनन्य प्रेम हो और हमारा मन एकाग्र हो जाए उसी का नाम योग है। बाबा कहते हैं, योग एक याद की यात्रा है। मन से उस परमपिता परमात्मा को याद करना, मन से उस परमधाम की यात्रा करना, उसमें तल्लीन हो जाना, ये उस योग का अभ्यास है। योग अभ्यास की जो टेकनालॉजी है वो एक साईंस पर आधारित है कि अनादि अविनाशी आत्मा के स्वाभाविक गुण हैं जिससे वो विचलित हो चुकी है जिसमें अब वो टिकी हुई नहीं है, फिर से उसमें स्थित होना ये योग

सहज राजयोग

- ब.कु. जगदीश हसीजा



जितनी गहराई से हम पॉज़ीटिव थॉट करेंगे उतनी गहराई से हम निगेटिव थॉट को समाप्त कर पायेंगे। जैसे यदि हमें कोई कांटा निकालना होता है तो हम सूई को उतनी गहराई तक ले जाते हैं जितना की कांटा होता है या उससे भी गहरा ताकि कांटे को पूरी तरह से निकाला जा सके। उसी प्रकार हमें निगेटिव थॉट्स को समाप्त करने के लिए पॉज़ीटिव थॉट्स करने होंगे तब हमारा जीवन स्वाभाविक रूप से योगी जीवन बन पाएगा।

है। और इसके साथ-साथ इसका एक वैज्ञानिक प्रिंसिपल है कि जब आप बार-बार किसी चीज को सोचते हैं उससे आपकी आदत बनती है। इसी तरह जब हम चलते-फिरते बार-बार यह सोचते हैं कि मैं आत्मा हूँ, मैं अनादि और अविनाशी हूँ तो बाद में हम इनका स्वरूप हो जाते हैं फिर हम चलते-फिरते शांत स्वरूप होकर कार्य करते हैं अशांति के संस्कार हमारे मिट जाते हैं। जो हमारे अशांति के संस्कार बने हैं वो निगेटिव थॉट्स को रिपीट करने से बने हैं। इसलिए अब जरूरी है कि हम उनको समाप्त करें और समाप्त करने का तरीका है कि उनकी जगह हम अब पॉज़ीटिव संकल्प करें। जितनी गहराई से हम पॉज़ीटिव थॉट करेंगे उतनी गहराई से हम निगेटिव थॉट को समाप्त कर पायेंगे। जैसे यदि हमें कोई कांटा निकालना होता है तो हम सूई को उतनी गहराई तक ले जाते हैं जितना की कांटा होता है या उससे भी गहरा ताकि कांटे को पूरी

तरह से निकाला जा सके। उसी प्रकार हमें निगेटिव थॉट्स को समाप्त करने के लिए पॉज़ीटिव थॉट्स करने होंगे तब हमारा जीवन स्वाभाविक रूप से योगी जीवन बन पाएगा। इसके साथ-साथ आवश्यक है कि योग के नियमों का हम पूरी तरह से पालन करें। जब तक हमारे मन में यह भाव नहीं आता कि मैं योगी बनूंगा क्योंकि हमारे सामने दो च्वाइस हैं योगी और भोगी तथा मुझे क्या बनना है किसमें प्राप्ति है, यह हमारे ऊपर निर्भर करता है। व्यक्ति देखता है कि जो संसार में गलत कर रहा है वह तरक्की कर रहा है, लोग उसका आदर करते हैं, उसके पास बहुत पैसे हैं। जब मनुष्य ऐसा देखता है तो उसे लगता है कि ये शॉर्ट कट है, मैं भी थोड़ी देर के लिए यही अपना लूँ, बाद में योगी बन जाऊंगा। योग से यदि पाप समाप्त होते हैं तो थोड़ा और योग लगा लूंगा जब बूढ़ा हो जाऊंगा तो माला लेके फेरा करूंगा, आमतौर से लोग ऐसा सोचते हैं, ऐसी धारणाएँ बना लेते हैं। ये बाद में करना या कल करना तो कल नाम काल का है। कल कभी आता नहीं है और ये योगी के जीवन में सबसे बड़ा विघ्न डालता है। संसार के जो आकर्षण हैं वो मनुष्य को अपनी तरफ खींच लेते हैं, तो कहीं न कहीं उसको रूकावट लाइफ में आती है जिसको वजह से उसको जो आनंद प्राप्त होना चाहिए, शांति प्राप्त होनी चाहिए, शक्ति प्राप्त होनी चाहिए उससे वो वंचित रह जाता है तो हमें ईश्वरीय

नियमों का पालन करना चाहिए। जैसे आहार के संबंध में बताया गया है कि हमें सात्विक आहार लेना चाहिए क्योंकि अन्न का मन पर प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार से यदि कोई व्यक्ति व्यर्थ की बातें करता है तो हमें कोशिश करके उसकी बातों को बदल देना चाहिए। योगी के जीवन में कई प्रकार की परीक्षाएँ एवं कठिनाइयाँ आती हैं लेकिन जब हम कोई असूल अपने जीवन में अपनाते हैं तो फिर किसी की बातों में आने का तो सवाल ही नहीं। हमें चाहिए कि हम अपनी जजमेंट खुद करें तथा हम बातों के सकारात्मक और नकारात्मक पहलू पर विचार करें। अच्छा या बुरा जो हम करेंगे उसके जिम्मेवार हम स्वयं हैं, ये सोचकर हमें कोई काम करना चाहिए। जब हम इन सब बातों को ध्यान में रखकर योग का अभ्यास करेंगे तो निश्चित रूप से इसका आनंद मिलेगा और शांति हमें प्राप्त होगी।



अहमदनगर-महा। केन्द्रीय मंत्री राव साहब दानवे को 100 प्रकार के फूलों से बने गुलदस्ते के साथ परमात्म अवतरण का संदेश पत्र भेंट करते हुए ब.कु. राजेश्वरी व ब.कु. दीपक।



चुरू। पुलिस लाईन में 'वाह ज़िंदगी वाह' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ब.कु. पिप्पू। साथ हैं एस.पी. राहुल कोटोकी, ए.एस.पी. तथा ब.कु. सुमन।



दिल्ली-किंग्सवे कैम्प। समर कैम्प के दौरान समूह चित्र में ब.कु. नीलम, ब.कु. सविता तथा बच्चे।



डिवरूगढ़-असम। मातेश्वरी जी के स्मृति दिवस पर 'प्रोटेक्शन ऑफ बुनेम इन द प्रेजेन्ट डेज सिनारिओ' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब.कु. विनीता।



फलक-चन्देर। डॉक्टर्स डे पर आयोजित कार्यक्रम में प्रख्यात डॉक्टरों को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में डॉ. संजय पंकेज, डॉ. विनोद कुमार, डॉ. बी.बी. ठाकुर, डॉ. विरेन्द्र किशोर, डॉ. एच.एन. भारद्वाज, डॉ. जालेश्वर प्रसाद, ब.कु. वंदना, ब.कु. रथमाला, डॉ. अवधेश, डॉ. सिता सिंह, डॉ. एच.एल. गुप्ता व डॉ. अभिनव कुमार।



फरीदाबाद सेक्टर-86। साई स्कूल में 6 से 8वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए आयोजित लाइफ स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम में सम्बोधित करते हुए ब.कु. मिनाक्षी तथा ध्यानपूर्वक सुनते हुए बच्चे।

आस्था के अनुरूप परिणाम

किसी काम में स्वयं को समर्पित करके देखिए और आस्था बनाए रखिए, मंजिल तक पहुँचने से कोई नहीं रोक सकता। विश्वास की रचनात्मक शक्ति द्वारा आप उन परिस्थितियों को प्रेरित करते हैं जो आपकी इच्छा को पूरी करने से संबंधित घटनाओं को जन्म देती हैं। एक सुस्थापित सिद्धांत है 'जितनी आस्था होगी, उतना ही मिलेगा।' अगर खुद में, अपने काम व देश में मौजूद अवसरों में विश्वास है और ईश्वर की महानता पर आस्था है, फिर आप कड़ी मेहनत करते हैं, सोचते हैं और अपने आपको कार्य के प्रति समर्पित कर देते हैं तो उस मंजिल तक पहुँचकर ही रहेंगे जहाँ पहुँचने की कल्पना करते हैं।

जब भी सामने कोई बाधा आए तो रुकिए, अपनी आंखें बंद कीजिए, हर उस चीज की कल्पना कीजिए जो उस बाधा के ऊपर है (नीचे की चीजों को मत देखिए) और फिर कल्पना कीजिए कि आप खुद को बाधा के ऊपर फेंक रहे हैं और कल्पना में अपने आपको

उस बाधा के ऊपर उठते हुए देखिए। विश्वास कीजिए कि आप ऊपर ले जाने वाली शक्ति का अनुभव करने लगेंगे। ऊपर उठाने वाली जो शक्ति प्राप्त होगी उससे आप आश्चर्यचकित रह जायेंगे। अगर मस्तिष्क की गहराई में सर्वश्रेष्ठ की कल्पना करते हैं और आस्था की ऊर्जा का प्रयोग करते हैं तो आपको सर्वश्रेष्ठ ही मिलेगा। जाहिर है कि सर्वश्रेष्ठ को हासिल करने की इस क्रिया में यह जानना महत्वपूर्ण है कि जाना कहां चाहते हैं। लक्ष्य तक तभी पहुँच सकते हैं, अपने सपने को सच तभी कर सकते हैं, जब आपको स्पष्ट रूप से यह मालूम हो कि वास्तव में जाना कहां चाहते हैं। आपको उम्मीद और आशा का स्पष्ट रूप से परिभाषित लक्ष्य होना चाहिए। ज्यादातर लोग कहीं नहीं पहुँच पाते, क्योंकि वे जानते ही नहीं कि उन्हें कहां पहुँचना है। बिना सुनिश्चित लक्ष्य के सर्वश्रेष्ठ परिणामों की उम्मीद की ही नहीं जा सकती।



दिल्ली-मजलिस पार्क। टैलेंट ऑफ इंडिया मैगज़ीन के पत्रकार आर.एस.योगी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.राजकुमारी।



अजमेर-धोलाभाटा। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् पुष्कर के प्रसिद्ध योगगुरु योगेश भारती ब्र.कु.योगिनी को सम्मानित करते हुए।



भवानीगढ़-पंजाब। सेवाकेन्द्र पर आने के पश्चात् प्रसिद्ध जैन मुनि निराले बाबा के साथ ब्र.कु.राजिन्दर कौर तथा अन्य।



फतेहगढ़। मातेश्वरी जी के स्मृति दिवस पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए ए.के.एस.चौहान, आई.ए.एस., ब्र.कु.सुमन तथा अन्य।



जोधपुर-राज। दस दिवसीय 'बाल संस्कार शिविर' के समापन के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु.शील, ब्र.कु.मंजू, ब्र.कु.मीनू तथा अन्य।



करनाल सैक्टर-7। मॉरिशियस के उप प्रधानमंत्री की धर्मपत्नी श्रीमती शोभा बेजू, महामण्डलेश्वर स्वामी उमाकान्तानंद सरस्वती, गज़ल गायक अर्जुन जयपुरी का अभिनन्दन करते हुए ब्र.कु.प्रेम।

अखाद्य वस्तुएं और उनका

शरीर पर प्रभाव

दुनिया भर के प्रसिद्ध डॉक्टरों ने खोजपूर्ण तथ्यों के साथ चाय को भयंकर विष माना जिसमें कुछ के निष्कर्ष यहाँ दे रहे हैं:- चाय के विषय में कुछ वैज्ञानिक व महापुरुषों के मत:

1. डॉ. हेग, एम.डी.- "यदि मुझे संसार के सबसे अधिक विषमय भोजन की सूची बनाने को कहा जाये तो मैं इस सूची में चाय को प्रथम स्थान पर रखूंगा। चाय में तो मांस से भी आठ गुणा अधिक अम्ल होता है।"
2. मियामी विश्वविद्यालय की डॉ.जुलिया मार्टन- "कैटैचिन टैनिन (जो चाय में पाए जाने वाले टैनिन का ही एक रूप है) कैसर होता है।"
3. महात्मा गांधी- "चाय ने हमारे हज़ारों स्त्री-पुरुषों को क्षुधा उड़ा दी है।"
4. अमेरिका के डॉ.हंसकेसर- "चाय से नासूर पैदा होता है।"
5. अमेरिका के डॉ. गिसमैन- "दिन में तीन प्याले चाय पीने से मांसपेशियों में खिंचाव, स्नायु-रोग, चिन्ता, भय, हृदय-कंपन तथा मस्तिष्क रोग हो जाते हैं।"
6. डॉ.ब्लाड- "चाय से भूख मर जाती है फिर कब्ज, सिर में चक्कर और मूर्च्छा के आक्रमण प्रारम्भ हो जाते हैं।"
7. डॉ. हैरीमिटर- "चाय सेवन करने वालों को स्वनदोष, वीर्य शैथिल्य आदि बीमारी हो जाती है।"
8. डॉ.मारिया फिशबेन- "चाय से ब्लड प्रेशर बढ़ता है।"
9. महर्षि दयानन्द- "चाय से बुद्धि का नाश होता है।"

सदा स्वस्थ जीवन

स्वर्णिम आहार से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर

ब्र.कु. ललित शातिवन

10. डॉ.बी.डब्ल्यू.रिचर्डसन- "धके हुए मस्तिष्क को विश्राम की ज़रूरत होती है तो चाय उसे सुलाने के बजाय, कार्य करने के लिए बाध्य करती है जिसका परिणाम धीरे-धीरे मस्तिष्क को निकम्मा बनाता है।"
11. डॉ.एडवर्ड स्मिथ- "चाय पीते ही चुस्ती लगती है किंतु बाद में जो थकान आती है, शरीर बहुत दुबल हो जाता है।"
12. डॉ.सेल्टन- "निर्विवाद रूप से यह सिद्ध हो चुका है कि चाय और कॉफी जठर में पाचन को मंद कर देते हैं, हठिले रोग पैदा होते हैं। उनका मज्जा तंत्र, यूरॉपिड तथा आंतों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। कोलेस्ट्रॉल चर्बी बढ़ती है।"
13. डॉ.सोहनलाल,इन्दौर- "चाय में कोई विटामिन नहीं होता, न पोषक तत्व हैं, नींद कम करती, भूख कम करती, कब्ज करती, गैस करती, उम्र घटाती है। चाय से न खून बनता, न मल बनता व मल बाहर करने में आंतें थक जाती हैं। स्वास्थ्य का सत्यानाश करती रहती है। धीमा जहर और धीमी मौत है।"
14. प्रो.मेंडल- "चाय पीने के बाद पेशाब में यूरिक एसिड दोगुना हो जाता है।"
15. राजनीतिज्ञ श्रीमोरारजी देसाई का कहना है, "यह कर्कों की समझदारी है कि यदि कुछ न मिले तो विष ही पी लें? यदि मुझे संसार की किसीली चीज़ों को सूची बनाने को कहें तो मैं चाय को प्रथम स्थान पर रखूंगा। निःसंदेह चाय ने जितना जन-स्वास्थ्य का अकल्याण किया है,

परिवार के नियम-कानून मिलकर तय करें

प्रश्न:- स्वीकार करके भी परेशानी तो मुझे ही आनी है।
उत्तर:- इसका और कोई समाधान भी नहीं है।
प्रश्न:- बच्चों को सही 'कोड ऑफ कन्डक्ट', सही तरीका सिखाना ही चाहिए।
उत्तर:- यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। इट डजेंट सी, एक है अपेक्षा, एक है किसी को आप अपना विचार दें, किसी को आप अपने समझाने के ढंग से सही और गलत बतायें। आपका जो रोल है आप वरिष्ठ हैं, आप पैरेंट हैं, आप शिक्षक हैं, यह आपका रोल है क्योंकि ये सब आपके दोस्त हैं। आपको अगर कुछ सही लगता है तो आप शेयर कर सकते हैं। लेकिन कहूँ कि मैं आशा करती हूँ कि आप भी वैसा ही करेंगे। इसका मतलब है कि मैं अपने विचार आपके ऊपर थोप रही हूँ। इसमें यह अंतर पड़ जाता है।
**पैरेंट्स और बच्चों के बीच में ये फर्क है। पैरेंट्स बहुत सारी अपेक्षा बच्चों से रखते हैं। लेकिन होता क्या है कि जब बच्चा उस अपेक्षा को पूरा नहीं कर पाता तब पैरेंट्स दुःखी हो जाते हैं, परेशान हो जाते हैं। इससे वो अपने आपको बहुत गिरा हुआ महसूस करते हैं कि मेरे बच्चे ने ऐसा कर दिया। अब हमने ही ये अपेक्षा रखी थी कि बच्चे के 90 प्रतिशत मार्क्स आयेगा या वो डॉक्टर बनें या कुछ भी, हमने उनसे अपेक्षा रखी और वो नहीं कर पाया। जिसके कारण मैं स्वयं को दुःखी और अनुमानित फील करती हूँ फिर मैं गुस्से में आकर कह देती हूँ कि मैंने उसके लिए इतना सारा कुछ किया, अब मेरा और उसका रिश्ता क्या हुआ? ये अपेक्षा किसने रखी थी? मैंने ही रखी थी। बच्चे ने तो उसे पूरा करने की कोशिश की थी।
दूसरों को हम बहुत क्यों देखें, अपने को क्यों नहीं। क्या मैं अपनी अपेक्षाओं को पूरा करने में सफल हूँ? आज हम कहते हैं कि सारा दिन**

में यह करूंगा और मैं ऐसा करने में सक्षम भी हूँ लेकिन मैं कर नहीं पाता हूँ। खुद तो खुद की अपेक्षाओं को आप पूरा नहीं कर पाते तो उसके लिए हमारे पास तो बहुत सारे बहाने होते हैं। वह आपको पता ही है कि ऐसा हो गया जिसके कारण से मैं नहीं कर सका। मैं तो पढ़कर गया था टीचर ही नहीं ठीक से....।
प्रश्न:- अगर हम वैसा नहीं कर पाते तो हम अपने आपसे भी इतने रिजेक्टेड हो जाते हैं जैसे हम बच्चों से होते हैं या वाक्यों से होते हैं। वाट इज़ द वे आऊट?
उत्तर:- सोसायटी एट लांच, बच्चों को घर के अंदर हमें यह समझना होगा कि हमारे लिए ये सही क्यों है और दूसरों के लिए ये गलत क्यों है। इसके लाभ और दृष्टभाव कौन-कौन से हैं और मुझे सही करने के लिए सशक्त बनाया जाए। क्या आप ऐसा कर सकते हैं। इट्स लाइक ए कोड, जो दूसरे के ऊपर जबरदस्ती थोप दिया जाता है। अगर दूसरा उनको स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है या दूसरे की उतना करने की क्षमता ही नहीं है तो वो नहीं कर पायेगा। फिर मैं कहती हूँ कि मैंने जितना किया उतना ही मैं आपसे भी उम्मीद करती हूँ।
प्रश्न:- जैसे आपने कहा कि हर देश के अपने-अपने नियम-कानून हैं। ठीक वैसे ही घरों के भी अपने कुछ 'लॉ' होते हैं। वो 'लॉ' को मैं नहीं समझती हूँ कि बच्चे स्वीकार करते होंगे, तो उस परिस्थिति में हमें क्या करना चाहिए?
उत्तर:- आप पहले ऐसा करो, जो हम घर में

अन्य ने नहीं।" अगर आपका चाय का व्यसन नहीं छूट रहा हो तो सुबह 5-6 घण्टे के उपवास के बाद एक बार रसाहार करने के बाद आप चाय को तरह प्राकृतिक चाय ले सकते हैं जिस निम्न प्रकार से बना सकते हैं। वैसे आप यह चाय भी न लें तो अच्छा है। अगर लेना भी चाहें तो शुरू के कुछ दिनों के लिए ही लें।
1. सौंफ (100ग्रा.), जीरा (100ग्रा.), दालचीनी (50ग्रा.), गुलाब के फूल (50ग्रा.), मूलहठी (50ग्रा.) उपरोक्त सामग्री को मिलाकर पाउडर बना लें। 1 चम्मच पाउडर एक कप पानी में उबालें। इसमें आप तुलसी, पुदीने के पत्ते, अदरक, इलायची डाल सकते हैं। नींबू का रस निचोड़ कर देशी गुड़ डालकर इस्तेमाल करें।
2. पालक के पत्ते 50ग्रा. अच्छी तरह धोकर कुकर में एक कप पानी के साथ अदरक व गुड़ डालकर एक सीटी लगा लें। अब इसे छानकर नींबू का रस मिलाकर इस्तेमाल करें।
चित्तौड़गढ़ की हेमा गुप्ता (09413895973), उम्र-46 वर्ष का, कोलेस्ट्रॉल बढ़ा हुआ था, मोटापा, सांस फूलती थी, गैस-एसिडिटी, नाभी बार-बार खिसकने आदि बीमारियों से पीड़ित थीं। सदा स्वस्थ जीवन पुस्तक पढ़कर स्वर्णिम आहार पद्धति चालू की। जल्दी ही लगभग सभी बीमारियों से मुक्ति मिली। वजन 8 किलो कम हुआ।
तो आइए, स्वर्णिम आहार पद्धति को अपनाकर इन गोली-दवाई-इंजेक्शन-बीमारी-अस्पताल-डॉक्टर-इलाज से मुक्ति पायें और सदा स्वस्थ जीवन का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करें।
M-07791846188
healthywealthyhappyclub@gmail.com
संपर्क करें केवल 1pm से 3pm के बीच में



ब्र.कु. शिवानी



वहेड़ी-बरेली(उ.प्र.)। संगीतमय राजयोग शिविर के पश्चात् केसर इंटरप्राइजेज के जी.एम. एस.एस. शर्मा को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र.कु. सुखदेवी।



रापरकच्छ। विधायक वाघजीभाई पटेल की स्मृति में आयोजित 'कुटुम्ब कल्याणकारी कथा' कार्यक्रम में कथाकार अश्विनभाई जोषी को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र.कु. सरोज व ब्र.कु. शोभना।



विलासपुर-छ.ग.। नवनिर्वाचित सांसद लखनलाल साहू को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र.कु. सविता।



राजगढ़-म.प्र.। 'धरा पर शान्ति महोत्सव' कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् मंच पर उपस्थित हैं व्यास जी, वरिष्ठ वकील, श्रीमती मोना सुस्ताती, जनपद अध्यक्ष, नम्रता विजयवर्गी, श्रीमती सिंधी, समाजसेवी, ब्र.कु. शशि, ब्र.कु. प्रभा मिश्रा व ब्र.कु. मधु।



आणंद-गुज.। 'नशामुक्ति अभियान' की चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में हंसा बहन, नगरपालिका उप-प्रमुख, ब्र.कु. चेतना, ब्र.कु. प्रेमिका तथा अन्य।



हरिद्वार। हरिवंश चुग, उपाध्यक्ष, हरिद्वार विकास प्राधिकरण के साथ जानचर्चा के बाद ओमशान्ति मीडिया के बारे में बताते हुए ब्र.कु. मोना, संचालिका, स्थानीय सेवाकेन्द्र।

'संतोष परम सुखम्' अर्थात् संतोष सर्व गुणों को खान है, सर्वश्रेष्ठ धन है। जो कुछ है उसे ईश्वरीय देन समझना। इस धन के सामने सारे धन तुच्छ है इसलिए दूसरों की प्राप्ति से, भाग्य से तुलना न करने तो हिस्से में आया उसमें राजी-खुशी रहना है। और यही शुभकामना रखना है कि,

'साई इतना दीजिये जामे कुटुम्ब समाय में भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।' सच्चा संतोषी कभी लोभ नहीं करता, वह जानता है कि संतोष का फल मीठा होता है।

एक बार किसी नगर में अकाल पड़ गया। उस नगर के जमींदार ने यह कहलवा दिया कि मैं प्रतिदिन बच्चों को खाने के लिए रोटी बाटूंगा, हमारे यहाँ सभी बच्चे इकट्ठे हो जाएँ। सभी बच्चों के आने पर वह जमींदार अपने हाथों से दो-दो रोटी प्रत्येक बच्चे को देता था। किंतु एक दस वर्ष की बच्ची जो बड़ी ही भोली-भाली थी, एकांत में खड़ी रहती थी। उसकी जब बारी आती अंत में सबसे छोटी रोटी ले लेती थी। अन्य सभी बच्चे उसे धक्का देकर बड़ी-बड़ी रोटियाँ ले लेते थे। इसी तरह से रोज वह बच्ची अंत में छोटी रोटी खुशी-खुशी लेकर घर पर अपनी माँ को देती थी। उधर माँ और बेटो के सिवाय कोई भी नहीं था। रोटी खाकर दोनो भगवान का गुणगान करते हुए सुख-शांति से सो जाते थे।

इसी प्रकार एक दिन वह बच्ची रोटी लेकर घर आयी। माँ ने जब रोटी तोड़ी तो उसमें से सोने के तीन छोटे-छोटे दाने मिले। माँ ने कहा, "बेटो, रोटी में मिले यह दाने जमींदार को दे आओ।" बच्ची टूटी हुई रोटी में सोने के दाने रखकर जमींदार के पास पहुंची। कहने लगी-बाबूजी, ये लो अपने सोने के दाने। जमींदार भौचक्का रह गया। उस बच्ची ने सारा किस्सा जमींदार को सुनाया। जमींदार सब कुछ सुनते उस बच्ची को अपलक देख रहा था। वह जानता था कि यह बच्ची अंत में शान्ति से अपने हिस्से की रोटी ले जाती थी। जमींदार ने कहा, बेटो तुम इसे ले जाओ। यह तुम्हारे संतोष का फल है। बच्ची ने उत्तर दिया-बाबूजी, संतोष का फल तो मुझे पहले ही प्राप्त हो गया कि भीड़ में धक्के नहीं खाने पड़े। जमींदार यही सोचता रहा कि बच्ची है तो छोटी, परन्तु बात बड़ी ही ऊँची और सयानी करती है। बाद में जमींदार ने उस बच्ची को धर्म-पुत्री बनाकर समूचे सम्पत्ति का उत्तराधिकार सौंप दिया। वैसे भी सन्तानहीन होने के कारण उसे सन्तान की आवश्यकता थी।

स्थूल धन से भी संतोष धन श्रेष्ठ है। उस बच्ची को संतोष का कितना मीठा फल मिल गया। वह बच्ची सचमुच संतुष्टमणि थी। यही संतुष्टता भगवान को मंजूर है। भाग्यशाली बच्चे ही संतुष्टमणि होते हैं। 'पाना था जो प लिया' इसी सोच में वे संतुष्ट रहते हैं।

ऐसी संतुष्टमणि आत्मायें अपने संतुष्ट स्वरूप से औरों के जीवन में भी सुख-शांति, संतुष्टता का प्रकाश दीप जलाते हैं। संतुष्ट होने की दवा भी कितनी सस्ती हमें परमात्मा ने बताया है। बस एक 'मेरा बाबा'। संतुष्टमणि बेफिक्र बादशाह होते हैं। उन्होंने सर्वदा डबल लाइट का ताज पहन रखा

मैं और संतुष्टता

है। यह ताज पहनने की विधि भी कितनी आसान है। बस मेरे को तरे में परिवर्तन करना। एक ताज है हल्के, निश्चितता का और दूसरा ताज है पवित्रता का, स्वच्छता, शुद्धता का। आनेवाला समय बड़ा कठिन है। बाद, अकाल, भूकम्प, सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदायें अपना जलवा दिखायेंगी। बीमारियाँ कहर ढायेंगी। ऐसे समय में व्याधिग्रस्त बीमार होते भी मन खुशा रहना तभी दुःख-मुक्त, वेदना मुक्ति को अनुभूति हम कर पायेंगे। संतुष्टता बड़ी शक्ति है। सारी समस्याओं का समाधान हमारी संतुष्टता है। संगम युग परिवर्तन युग है, इसमें पुराने संस्कार, वृत्तियों को बदलना है। यह परिवर्तन शिव धनुष है। शिव बाबा की शिक्षा कालातीत है। इसी ज्ञान-योग के आधार पर विश्व परिवर्तन को अंजाम देने का दायित्व हम बच्चों का है। संसार में बंधुत्व, एकता, शान्ति स्थापित करने के लिए ईश्वरीय ज्ञान नितान्त आवश्यक है। उसके लिए सैनिक नहीं शस्त्र, प्रवासी नहीं रास्ता, विद्यार्थी नहीं विद्यालय बदलने की जरूरत है। प्रवृत्ति नहीं वृत्ति परिवर्तन हो। सच्चा संतोष भैसे की अमरी से नहीं संस्कारों की समृद्धि से प्राप्त होगा।

आज दिन की जगमागाहट में भी हमारा मन अंधेरे से व्याप्त है। यह अंधेरा अज्ञान का है। सूर्यास्त के बाद भी जिसके अंदर ज्ञान का दीप प्रज्वलित है वही सच्चा ज्ञानी है। आत्म ज्ञानी कभी उदास, विषण्ण नहीं होता। वह सदैव हंसमुख, संतुष्ट व प्रसन्नचित्त रहता है।

मेरे रास्ते में चारों तरफ व्यर्थ के जाल बिखरे पड़े हैं। इन व्यर्थों के कारण मेरी समर्थ समाप्त होकर मेरी संतुष्टता खतरे में पड़ी है। इसलिए मुझे विवेक से काम लेना है। निर्माही, अनासक्त बनना उदास, विषण्ण नहीं होता। वह सदैव हंसमुख, संतुष्ट व प्रसन्नचित्त रहता है।

आत्मा की महत्ता निर्निर्वाद है फिर भी कर्म करने के लिए मिले हुए देह का महत्व भी कम नहीं है। शरीर तो धर्म साधन है। आत्मा की आभिव्यक्ति के लिए देह जरूरी है। जब देह की बात होती है तो उसके हर अवयव का मूल्य समझ में आता है। आत्मा की नियंत्रण कक्षा के संतरी आँख, नाक, कान, मुख, जीभ ठीक नहीं होंगे तो जीवात्मा को जीवनयात्रा आनंदयात्रा कैसे होगी? भले वो आत्मा के सेवक हैं फिर भी उनका महत्व अनन्य है। आँखें तो विश्व को अपनी गोद में समाने वाली दूरबीन हैं, कान आत्मा की श्रुति हैं। कान के माध्यम से हम संवाद, संगीत सुन सकते हैं। नाक से प्राणवायु लेकर देह में प्राण फूंकते हैं, मुख से बातचीत होती है, भावना व्यक्त कर सकते हैं। जीभ द्वारा रुचि का अनुभव करते हैं। अन्न पेट में

जाकर पोषण देता है लेकिन हम इन कर्मोद्भयों का परामर्श बहुत कम करते हैं। इसलिए माया उन्हें सहज वश कर लेती है। जब इनकी सहेत विगड़ती है तब ही हम सावधान होते हैं। इसलिए मन को खुशी, उमंग-उत्साह के लिए उनको सम्भालना जरूरी हो जाता है। समय-समयान्तर विश्राम आवश्यक है। बुरी आदतों एवं व्यसनों से बचना है। क्योंकि उनसे हमारी क्षमता प्रभावित होती है। देह क्षीण होता है फिर आत्मा भी कमजोर होती है। ध्यान रहे मेरी संतुष्टि मुझ आत्मा की संपत्ति है। देह का हिस्सा-किताब मेरा कर्मभोग है लेकिन मुझे सदा संतुष्ट व प्रसन्न रहना है। बेफिक्र बादशाह यह मेरी पधचान है, स्वमान है। मैं खुशहाल, आनंदस्वरूप आत्मा हूँ यह कभी नहीं भूलना है। संत तुकाराम कहते हैं-मन को प्रसन्न करो, वही सर्व सिद्धि का कारण है। हम खुशहाकिस्मत हैं, हम योगी हैं। योगी हमेशा स्थिरचित्त होता है। मन की सावधानी, दक्षता हमें निर्विघ्न रखती है।

जोना एक सफर है, यात्रा है, मैं यात्री हूँ। मैं इस धरती पर मेहमान हूँ, सफर के सब दिन एक जैसे नहीं होते। उनकी विविधता का मजा लेना है। इस विविधता में ही नवीनता दृढ़नी है। तभी यह यात्रा सुखद तथा रमणीक होगी। इस घड़ी इस यात्रा में स्वयं विघ्न-विनाशक पिता साथ है तो चिंता किस बात की। इस यात्रा में हमारी खुशी, संतोष कायम रहे इसलिए शिव पिता ने आत्मा की ढाल दी है कि हमें साक्षीदृष्टा होकर जीना है। ड्रामा के किसी भी दृश्य से प्रभावित नहीं होना है। निर्भय होकर समस्याओं का सामना करना है। यह जीने की नई दृष्टि सकारात्मक होने के कारण हमें व्यर्थ से, विघ्नों से बचाती है। जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। हमारे संकल्प, सांच समर्थ होते हैं जो हमें सफलता प्रदान करते हैं। हमारी खुशी, प्रसन्नता दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बन जाती है। प्रसन्नता आयु बढ़ाती है।

इस सृष्टि मंच पर मैं एक अभिनेता हूँ। यह ड्रामा समाप्त होने पर मुझे घर जाना है। इस दृष्टिकोण से जीयेगे तो सारे प्रश्न खत्म होंगे फिर बचेंगे सिर्फ उत्तर, जो इत्र का सुगंध देंगे। क्योंकि इस नाटक के सारे सुख-दुःख-विनाशगी हैं, सत्य केवल एक ही है कि मैं आत्मा हूँ। मेरे साथ खुदा दोस्त है। मैं खुदाई खिदमतगार हूँ। मेरी खुशी, संतुष्टि यही मेरी संघर्षशक्ति है। सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। अमृतवेले से ही परमात्मा हम बच्चों पर वरदानों की वर्षा करता है। उसका फायदा लेना हमारा कायदा बने। वर्ष के पहले दिन से दृढ़ संकल्प करने वालों को पुरुषार्थ में विशेष मदद देने की वापदाद ने हमें अनुपम सौगत दी है।

संतुष्टता की शक्ति से विशेष कार्य करने वालों को खास सफलता मिलेगी यह परमपिता का वरदान है। संगमयुग के इस विशेष युग में विशेषता के बीज का सर्वश्रेष्ठ फल संतुष्टता है। संतुष्ट रहना और औरों को करना यही विशेष आत्मा का लक्षण है। संतुष्टता के प्रकल्प चारों तरफ फैलाने की कमाल और धमाल हम बच्चों को करनी है। इसके लिए हिम्मत बच्चे मददे खुदा यह बाप का वायदा है। -ब्र.कु. गुणवंत पाटिल, पुणे।



हिंगोली-वांगर नगर(महा.)। नव निर्मित सेवाकेन्द्र 'राजयोग भवन' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शीलू,माउण्ट आबू, ब्र.कु.सोमप्रभा,सोलापुर, ब्र.कु.सुनंदा,क्षेत्रीय संचालिका, ब्र.कु.शोभा,गोवा, ब्र.कु.अरुणा, संतोष वांगर, दिल्ली वांगर, माधवराव पाटील, ब्र.कु. ज्ञानेश्वर तथा अन्य।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान- मैं परमात्म तख्तनशीन आत्मा हूँ।

अमृतवेले व नुमाशाम :- शिवबाबा से सर्वशक्तियों को किरणें मुझ आत्मा में निरंतर प्रवेश कर रही हैं....., परमात्म गोदी में बैठी मुझ आत्मा से निरंतर पवित्रता, सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम, खुशी व सर्व शक्तियों को किरणें सारे विश्व में फैल रही हैं.....। सर्व आत्माओं व प्रकृति को शुद्ध, शान्त व पवन बनाती जा रही हैं.....। विश्व की सर्व आत्माएं मुझ आत्मा की ओर देखकर प्यारे शिव बाबा से मिलने वाले सुख, शान्ति का गहन अनुभव कर रही हैं.....।

नशा :- परमात्म तख्तनशीन, भृकुटी तख्तनशीन और विश्व के तख्तनशीन अधिकारी आत्मायें हम ब्राह्मण ही हैं। परमात्म तख्त सिर्फ हमारे भाग्य में ही है। हमें भक्ति मार्ग में कितनी ऊंची दृष्टि से देखते रहते हैं। वाह मेरा भाग्य, कौटो में कोई के रूप में मेरा गायन व पुजन होता है। वाह बाबा वाह, सचमुच आपने हमें कितना ऊंचा बना दिया.....।

स्मृति रहे :- देह-अभिमान व देहभान रूपी मिट्टी में पांव नहीं रखेंगे। देह-अभिमान रूपी गहरी

मिट्टी शीघ्र ही मिट्टी में मिल जाएगी। मैं आत्मा देहभान की मिट्टी से अलग हूँ.....। अब मुझ आत्मा के इस सृष्टि रंगमंच पर अंतिम क्षण भी पूरे हो रहे हैं... विश्व की सर्व आत्माओं को बापदादा का साक्षात्कार कराने के लिए ही मैं थोड़े से समय के लिए यहां रुकी हूँ.....।

कर्म करते विशेष अटेन्शन :- कर्म करते-करते अचानक सेकेण्ड में फुलस्टॉप लगाकर निराकारी या फरिश्ता स्थिति का अभ्यास करेंगे।

शिवभगवानुवाच :- आगे चलकर ऐसे सरकमस्टांस आयेंगे जो आपको सेकेण्ड में फुलस्टॉप लगाना पड़ेगा। बहुत समय का अभ्यास आगे चल आपका सहयोगी बनेगा।

चलते-फिरते :- मैं आत्मा शान्ति के झूले में झूल रही हूँ.....। मैं आत्मा सुख के झूले में झूल रही हूँ.....। मैं आत्मा प्रेम के झूले में झूल रही हूँ.....। यह भी याद रहे :- साधन भल यूज करें लेकिन साधनों के पीछे कहीं साधना न छूट जाए। परमात्म प्यार व सुख से वंचित न रह जाएं। यह

संगमयुग का अमूल्य समय अतीन्द्रिय सुख अनुभव करने का समय है और भविष्य ऊंच अधिकारी पद प्राप्त करने का आधार है।

होमवर्क :- व्यर्थ संकल्पों से संपूर्ण रूप से मुक्त होने के लिए मुरली को दिन में कम से कम पांच बार रिचाईज़ करेंगे, और मनन-चिन्तन करेंगे।

दृढ़ प्रतिज्ञा :- बाबा से मिलन मनाने के लिए जब मधुवन में आयेंगे तो बापदादा की शिक्षा के अनुसार स्वयं में परिवर्तन करके आयेंगे। कोई न कोई जो कुछ पुरुषार्थ में खुद समझो कि यह नहीं होना चाहिए, वह परिवर्तन करके आयेंगे! परिवर्तन सेरीमनी मनायेंगे। इस तरह हम परमात्म गोदी में रहेंगे, तख्त पर बैठे रहेंगे, झूलों में झूलते रहेंगे। यह परमात्मद की मस्ती का अनुभव रहेगा।

पुरुषार्थ :- अभी समय के अनुसार ढीला-ढाला पुरुषार्थ छोड़ तीव्रता के साथ सहज पुरुषार्थ की सीड अति फास्ट निरन्तर व नेचुरल चलती रहे।



राजकोट। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' विषय के अंतर्गत आयोजित 'सर्वधर्म सद्भावना स्नेह मिलन' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए क्रिश्चियन धर्म के विशा प जोस, हजरत मौलाना सैय्यद हाजी सिकंदरबापू कादरी, अशगर वंथलीवाला, चोहरा समाज, सरदार भागसिंह, ब्र.कु. भारती, क्षेत्रीय संचालिका, ब्र.कु. मनोरमा, इलाहाबाद।



शिमला-सुन्नी। ब्रह्माकुमारीज पाठशाला का उद्घाटन करते हुए चेयरमैन नगर परिषद सुनिता, पूर्व विधायक हीरालाल, ब्र.कु. शकुलता तथा अन्य।



सोचित्रा-गुज। श्री फुनीबा सार्वजनिक महिला पुस्तकालय में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में संबोधित करते हुए ब्र.कु. भगवती। साथ हैं वर्षा मेहता, ग्रंथालय नियामक, गुज., श्रीमती रोहिणी बहन, प्रेसीडेंट, सोचित्रा महिला पुस्तकालय, अरुण देसाई, प्रेसीडेंट, पेटलाद महिला पुस्तकालय तथा अन्य।



सादुल शहर। 'सरकार आपके द्वार' कार्यक्रम के दौरान जिला परिषद सदस्य बलदेव सिंह बराड़ को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. माधवी।



पाण्डव भवन-माउण्ट आबू। पाण्डव भवन का अवलोकन करने के पश्चात् समूह चित्र में शिखरी साई बाबा ट्रस्ट के चेयरमैन व विधायक ससाने जी व उनकी धर्मपत्नी, चेयरमैन, नगरपालिका रामपुर, ब्र.कु. शोली, ब्र.कु. इंदिरा, ब्र.कु. शशिकांत व ब्र.कु. चंद्रशेखर।



गांधीनगर-गुज। ई.बी.आई. जेड. डॉट कॉम प्रा. लि. के कॉन्वोकेशन के प्रारंभ में शिव संदेश व आशीर्वाचन देते हुए ब्र.कु. शारदा, क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. कैलाश, ब्र.कु. तारा तथा ब्र.कु. रंजन।

स्वमान -मैं आत्मा मास्टर ज्ञानसूर्य हूँ।

हम अपने मन और बुद्धि की एकाग्रता बढ़ाने के लिए बहुत सुन्दर अभ्यास करेंगे। भगवान से मिलन मनाने का पूरा-पूरा आनन्द लेगे। भगवान के प्यार में मग्न हो जाएंगे।

स्वमान :- मैं आत्मा मास्टर ज्ञानसूर्य हूँ.....।

योगाभ्यास :- पतित पावन ज्ञानसूर्य शिवबाबा मुझ से मिलने के लिए अपने परमधाम को छोड़ कर मेरे पास आ रहे हैं....., शिव बाबा से निकल रही सर्वशक्तियों की रंगबिरंगी किरणों का प्रकाश समस्त विश्व में फैल रहा है....., अब प्यारे बाबा बिल्कुल मेरे मस्तक के पास पहुंच गए हैं..... मस्तक में विराजमान मुझ आत्मा को टच कर सर्वशक्तियों की आनंददायी अनुभूति करा रहे हैं....., वाह कितने सुखद, अलौकिक, प्यारे, प्यारे आनन्द अनुभव करने वाले यह क्षण हैं.....। मैं आत्मा सम्पूर्ण पावन बनती जा रही हूँ....., तन, मन शांत, शीतल, शुद्ध पवित्र होते जा रहे हैं....., लंबे समय तक

बाबा के साथ कम्बाइन्ड होकर मैं आत्मा एकदम हल्की हो गई हूँ.....। ज्ञान सूर्य शिव बाबा की किरणों से मैं नहा रही हूँ.....। कितना आनन्द आ रहा है....., वाह मेरे मिठे बाबा, प्यारे बाबा....., वाह.....।

चलते-फिरते अनुभूति :- मैं अव्यक्त फरिश्ता हूँ.....। कर्म करते बापदादा को बीच-बीच में अपने पास बुलाएंगे और कभी बाबा के पास सूक्ष्मवतन का अनुभव करेंगे। मैं अव्यक्त फरिश्ता सूक्ष्मवतन से आया हूँ.....। इस साकार कर्मक्षेत्र में ब्रह्मा बाप समान कर्मयोगी हूँ.....। प्यारे अव्यक्त ब्रह्मा बाबा फरिश्ता रूप में बाहों पसारे मेरे सामने खड़े हैं....., बाबा मुझे शक्तिशाली दृष्टि दे रहे हैं.....। ब्रह्मा बाबा की भृकुटी से ज्ञानसूर्य शिव बाबा की सर्वशक्तियों की किरणें मुझ आत्मा के ऊपर पड़ रही हैं.....। मैं एकदम हल्का, डबल लाइट फरिश्ते की अनुभूति कर रहा हूँ.....।

दिन में पांच वार ट्रॉफिक कन्ट्रोल :- अनुभव करेंगे कि हजार भुजाओं के साथ सर्वशक्तित्वान बाबा मेरे पास आ गया है, बाबा ने मेरे चारों ओर अपनी भुजाएं फैला दी हैं....., चारों ओर से मुझ में बाबा की शक्तियां समा रही हैं....., बाबा कह रहे बच्चे आज से मेरी सर्व शक्तियां तुम्हारी हैं तुम मास्टर सर्वशक्तित्वान हो, विघ्नविनाशक हो, मास्टर ज्ञान सूर्य हो....., परमपवित्र आत्मा हो.....। अनुभव करें बाबा हमें अनेक वरदानों से भरपूर कर रहा है.....।

धारणा :- मन-वचन-कर्म में संपूर्ण पवित्रता।

चिन्तन :- साक्षीदृष्टा कैसे रहे?

अपनी स्थिति को शक्तिशाली बनाने के लिए चिन्तन करना अति आवश्यक है। हर परिस्थिति में स्वस्थिति शक्तिशाली बनाए रखने के लिए साक्षीदृष्टा कैसे रहें। इस पर मनन-चिन्तन कर लिखेंगे। जो मक्खन निकलेगा वह आत्मा की शक्तिशाली बना देगा।



राजयोग से ...पेज 1 का शेष...

हमें स्वतः ही प्राप्त होता है। हमारे पूर्वज भी देवता कहलाते हैं, इसलिए आज तक भी मनुष्य उनके जड़ चित्रों से कुछ न कुछ मांगते ही रहते हैं। अध्यक्षीय वक्तव्य में ब्र.कु. शुक्ला ने कहा कि हमारा ये जीवन प्रभु का उपहार है, हमें अपने जीवन को श्रेष्ठ कार्यों में ही लगाना है। हमें अपने अन्दर के मौलिक गुणों को निखराने की आवश्यकता है। ब्र.कु. नरेन्द्र, दिल्ली ने ब्रह्माकुमारीज द्वारा की जा रही पुलिस की सेवाओं की जानकारी दी। कर्नल सती ने सभी

को एक्सरसाइज कराई। मंच संचालन ब्र.कु. हुसैन ने किया। इस कार्यक्रम में दिल्ली एवं गुडगांव से 300 से भी अधिक पुलिस और अर्ध सैनिक बलों के जवानों ने भाग लिया, कार्यक्रम में गुडगांव एवं रेवाड़ी के ए.सी.पी. भी शामिल हुए।

वारणासी। डी.एल. डब्ल्यू. संस्थान में राजयोग उप-सेवाकेन्द्र के पहली वर्षगांठ के उपलक्ष्य पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में 'तनाव प्रबंधन' विषय पर चर्चा करते हुए वी.पी. खरे, महाप्रबन्धक, आस्थाना जी, मुख्य यांत्रिक अभियंता, एस.पी. पिपलानी, भण्डार नियंत्रक, ब्र.कु. सरोज, ब्र.कु. विपिन, ब्र.कु. निर्मला तथा अन्य।

जो युद्ध जैसी परिस्थिति में स्थिर 'वही युधिष्ठिर'

दैवी प्रवृत्ति अर्थात् जो धर्म पक्ष का वाचक है जिसके अंतर्गत पाण्डव समाए हुए हैं या पाण्डवी वृत्ति समायी हुई है। संसार में आज पाण्डव कितने हैं अर्थात् भगवान से प्रीत करने वाले कितने प्रतिशत में है? इसलिए दिखाया गया है कि सौ कौरव और पांच पांडव अर्थात् युद्धी भर।

दुनिया को अगर सौ प्रतिशत में ले लिया जाए तो उसमें से भगवान से प्रीत करने वाले संसार में कितने लोग होंगे? सिर्फ पाँच प्रतिशत लोग ही सच्चे रूप से ईश्वर से प्रीत करते हैं, स्वार्थ से नहीं। सच्चे दिल से जो ईश्वर से प्रीत करता है, वही धर्म पक्ष का वाचक है या वही पांडव है। उसमें भी युधिष्ठिर कितने प्रतिशत लोग होंगे? युधिष्ठिर का अर्थ है आध्यात्मिक व्यक्तित्व वाला। युद्ध जैसी परिस्थिति में भी जो स्थिर बुद्धि, संतुलित बुद्धि रहे, उसको कहते हैं युधिष्ठिर। आज समय ऐसा है जहाँ जीवन में हर व्यक्ति को संघर्ष करना पड़ रहा है। जैसे जीवन ही एक युद्ध बन गया है, यह जीवन एक ऐसा कर्म क्षेत्र है जहाँ हर समय इसान को नित्य युद्ध करना पड़ता है। ऐसी युद्ध जैसी परिस्थिति में कई बार मनुष्य अपना मानसिक संतुलन खो देता है। कितने प्रतिशत मनुष्य ऐसे होंगे जो युद्ध जैसी परिस्थिति में भी अपना मानसिक संतुलन बनाए रखते हैं? सिर्फ एक प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो अपना मानसिक संतुलन बनाए रखते हैं।

दूसरे नम्बर पर है, भीम जो आत्म-शक्ति से सम्पन्न है। जिसके पास आत्म-बल है, जिसके सामने कोई भी परिस्थिति उठर नहीं सकती। उसके अंदर जड़ से उखाड़ देने की क्षमता है, इतना विल पावर था उसके पास तभी तो उसे भीम कहा गया। आज को दुनिया में इतने आत्म-शक्ति से युक्त या इतना मनोबल धारण करने वाले कितने लोग होंगे? सिर्फ एक प्रतिशत।

जबकि हमें यह ज्ञात है कि सभी आत्माओं को एक निश्चित पार्ट (अभिनय) मिला हुआ है। उसका वही पार्ट (अभिनय) सत्य है। तो हम सभी मनुष्यात्माओं के पार्ट (अभिनय) का आनन्द लें। हमें सभी मनुष्यात्माओं का पार्ट (अभिनय) अच्छा लगे। परन्तु जहाँ स्वार्थ की भावना काम करती है, वहाँ हम दूसरों के पार्ट (अभिनय) में कमियाँ निकालने लगते हैं। जहाँ ईर्ष्या अपना काम कर रही है, वहाँ हमें दूसरों का अच्छा अभिनय भी अच्छा नहीं लगता! इसलिए जो कुछ भी हो रहा है, वही सत्य है, वही कल्याणकारी है, जिस समय होना चाहिए, वही होना चाहिए — ऐसी ज्ञान-स्वरूप स्थिति में रहना ही साक्षीपन की स्थिति है। जीवन में कुछ भी घटित हुआ हो, परन्तु किसी का पार्ट (अभिनय) देखकर मन विचलित न हो, यही साक्षीपन की स्थिति है।

अपने कर्म करते हुए, दूसरे के कर्मों को सुधारते हुए, दूसरों को शिक्षाएँ देते हुए व अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करते हुए भी साक्षी भाव में रहें। साक्षी भाव में रहकर स्वयं का श्रेष्ठ पार्ट (अभिनय) बजाने से कभी भी मन भारी व उदास नहीं होगा। परन्तु ध्यान रहे कि यदि मन में किसी भी व्यक्ति के प्रति नफरत है अथवा लगाव है तो साक्षीपन की स्थिति खत्म हो जाएगी। हमें तो साक्षी भाव में स्थित होकर महाविनाश को देखना है। यदि लम्बे समय तक हमने साक्षी भाव को स्थिति नहीं अपनाई है तो विनाश से उत्पन्न भय हमें अवश्य ही अपनी ओर प्रभावित करेगा और हम अपनी तपस्या में स्थिर नहीं रह सकेंगे। इसलिए अपनी जिन्दगी में व दूसरों की जिन्दगी में कुछ भी होता देखकर न मन में प्रश्न उत्पन्न हो और न ही आश्चर्य

ठीक इसी प्रकार, तीसरे नम्बर पर है अर्जुन। अर्जुन अर्थात् जिसमें अर्जन करने का भाव है। अर्जुन को भगवान ने जो कहा उसे उसने 'हाँ जी' करके उसको स्वीकार किया फिर उसे कर्म में लाया। ऐसे अर्जन करने वाले का भाव भी कितने प्रतिशत लोगों में होता है। सिर्फ एक प्रतिशत लोग ऐसे हैं, जो अर्जन करना भी और कराना भी जानते हैं।

चौथा है, नकुल। नकुल अर्थात् जो नियमों में चलने वाला जिसको आज की दुनिया में कहते हैं सिद्धांतवादी व्यक्ति, जो अपने जीवन को संयमित रखता है। ऐसे लोग भी आज के संसार में कितने हैं, केवल एक प्रतिशत।

पाँचवा है, सहदेव। सहदेव अर्थात् जो हर कार्य में अपना सहयोग देता है। विशेषकर जहाँ कहीं शुभ कार्य होता है, धार्मिक कार्य होता है, आध्यात्मिक कार्य होता है वहाँ जो नित्य अपना सहयोग देने वाले हैं, बिना किसी अपेक्षा के, ऐसे सहदेव भी आज के संसार में कितने प्रतिशत होंगे? सिर्फ एक प्रतिशत और वो सहयोग भी किस आधार से दे सकते हैं, उन्हें दिव्य दृष्टि का वरदान था जिनके पास दिव्य बुद्धि थी। उस दिव्य बुद्धि से वो यथार्थ को अच्छी तरह से देख सकते थे। इसीलिए उसको सहयोग देने वाला देवता अर्थात् 'सहदेव' कहा गया।

ये पाँच पाण्डव हैं, आज की दुनिया में। आज हम सभी कहीं हैं? क्या हम युधिष्ठिर हैं? भीम हैं? अर्जुन हैं? नकुल हैं या सहदेव हैं?

साक्षीपन क्या है ?

— ब्र.कु. सूर्य, मधुवन

की स्थिति उत्पन्न हो - यही साक्षी भाव की स्थिति है।

ऐसा साक्षी भाव अपनाने के लिए हमें निरन्तर ज्ञान की स्मृतियों में रहना चाहिए। जब लोग विनाश की आपदाओं में हाहाकार करें तो हमें याद रहे कि सभी मनुष्यात्माएँ अपने कर्मों की सजा भोगकर, पावन बन रही हैं। प्राकृतिक आपदा जब विनाश का ताण्डव नृत्य करे तो हमें याद रहे कि प्रकृति का शुद्धिकरण हो रहा है। हमें यह भी याद रहे कि हमने ही तो महाकाल को बुलाया है। तपस्वी कहीं भी उलझा हुआ न हो।

तपस्या निर्बन्धन स्थिति है। मन की उलझन तपस्वी के लिए बड़ा बन्धन है। कर्म भी तपस्या में यदि बन्धन बन रहे हैं तो ऐसा तपस्वी बन्धनों की रस्सियों में बंधकर असफल हो जाता है। इसलिए तपस्या के श्रेष्ठ मार्ग पर चलने वालों को चाहिए कि वे स्वयं को कहीं भी उलझाएँ नहीं। पुरुषोत्तम संगमयुगी जीवन, उलझनों व कर्म बन्धनों में न बीते। ज्ञान का प्रकाश पाकर और भगवान का साथ पाकर भी किसी ने स्वयं को उलझनों से मुक्त रखना न सीखा तो सम्झो कि उसने कुछ भी नहीं सीखा।

अतः हम सम्बन्धों में न अटकें, न कर्म हमें बाँध सकें और न ही जीवन की समस्याएँ हमें अपने जाल में उलझा सकें। इसके लिए हमें चाहिए — सरल स्वभाव। जटिल स्वभाव, कटु स्वभाव, मनुष्य को सहज ही

आज तो हम यही कहेंगे कि आप सभी यथार्थ रूप में अर्जुन हैं। ऐसे अर्जुनों के प्रति ही श्रीमद्भागवद्गीता का ज्ञान है। जो कि स्वयं भगवान के श्री मुख से, श्रेष्ठ वचन सुनने का परम सौभाग्य प्राप्त किया है। इसके विपरीत

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

— राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उषा



देखा जाए तो कौरव हैं। कौरव अर्थात् जो अधर्म पक्ष का वाचक है। धृतराष्ट्र अर्थात् जो राजसत्ता बाहुबल या भूमिबल के अहंकार से युक्त है। गांधारी अर्थात् जो देखते हुए भी देखना नहीं चाहती थी। इसीलिए उसने आँखों पर पट्टी बाँध ली थी। आज के समय में ऐसे धृतराष्ट्र और गांधारी देखने को मिलते हैं और उनके सौ पुत्र भी। बहुत आश्चर्य की बात है कि एक बार मैं किताब पढ़ते-पढ़ते कौरवों के सौ नाम के सम्पर्क में आई जो कौरव थे उनके नाम की शुरुआत 'दु' से होती थी। जैसे दुर्योधन - जिसने धर्म का दुरुपयोग किया। आज समाज में ऐसे बच्चे देखने को मिलते हैं।

दुःशासन - जिसके जीवन में अनुशासन नाम की चीज ही न हो। ऐसे दुःशासन भी देखने को मिलते हैं। दुःशाल, दुःसुप्त, दुष्कर्ण, अर्थात् 'दु' से ही सारे नाम देखने को मिलते हैं। जिसका भावार्थ है 'दुःख देने वाला या जिसमें 'दुष्टता' का भाव समाया हो। -क्रमशः

उलझा देता है। अब यह हमारे स्वयं के ऊपर है कि हम स्वयं को उलझाएँ अथवा मुक्त रखें। भला विचार करें कि क्या तपस्वी को कोई बन्धन बाँध सकता है? सम्पूर्ण विश्व को मुक्ति का मार्ग दिखाने वाले क्या कहीं उलझ सकते हैं !

क्षमा तपस्वियों की शोभा है, यही उनका बल है। तपस्वी को कभी भी ऐसा नहीं लगता कि वह बहुत सहन करता है। हम दूसरों के कटु बोल सुनकर खुशी से सहन करें व उन्हें क्षमा कर दें तो कभी भी हमारा चित्त प्रतियोग की भावना में नहीं जलेगा। जो सहनशील बने, वे महान बन गए। तपस्वी को क्रोध व अहंकार की अग्नि नहीं जलानी चाहिए। शीतल चित्त से इस अग्नि को इतना शान्त कर दें कि तेज तूफान भी इसे भड़का न सके। वही हमारी तपस्या की प्रत्यक्ष सिद्धि होगी।

इस प्रकार हम महान तपस्वी बनकर संसार से विकारों की अग्नि को शीतल करें। हमें तपस्या करने का सर्वश्रेष्ठ अवसर प्राप्त हुआ है। हमारी तपस्या विश्व की समस्याओं का निदान करेगी, हमारी तपस्या अनेक भटके हुए तपस्वियों को सत्मार्ग दिखाएगी, हमारी तपस्या अनेकों के कष्ट मिटाएगी। इसलिए हम आराम परस्त न बनें। तपस्वी कभी भी नौद के वश नहीं होते, तपस्वी कभी अलबेले नहीं होते। हमें अपनी तपस्या से सर्वथम अपने जीवन को आलोकित करना है, ताकि हमारा सम्पूर्ण अन्धकार मिट जाए, हमारे चित्त में छुपा हुआ भय भी नष्ट हो जाए और हमारा जीवन विश्व के लिए लाइट हाउस बन जाए। तो आओ ब्रह्मा-वत्स, तपस्वी जीवन बनाकर सम्पूर्णता की ओर चलें।



कोथागुडम। तेलंगाना राज्य के प्रथम डिप्युटी सी.एम. डॉ. राजइव्या को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र.कु. महेश्वरी।



पन्ना-म.प्र। कैबिनेट मंत्री कुसुम सिंह मेहदेले का स्वागत करने के पश्चात् ब्र.कु. सीता तथा अन्य।



पाटन-गुज.। सिनियर सिटीजन प्रेसिडेंट पूनम भाई, ब्र.कु. नीलम का अभिवादन करते हुए।



रीवा। सेवाकेन्द्र में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में मंचासीन शिवराज सिंह वर्मा, अपर कलेक्टर, डॉ. ई.के. मिश्रा, समाजसेवी एवं डेन्टल सर्जन, ब्र.कु. निर्मला तथा अन्य।



पतलीकुहल-मनाली (हि.प्र.)। 'मेरा भारत व्यसनमुक्त भारत' राष्ट्रीय अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष धनेश्वरी देवी, ब्र.कु. डॉ. भारती, ब्र.कु. डॉ. लेखराम, ब्र.कु. डॉ. मेघना, ब्र.कु. साधना व अन्य।



ओ.आर.सी-गुडगांव। 'आदर्श ग्रामीण नेतृत्व पंच-संरपंच' आध्यात्मिक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. आशा, विधायक गंगाराम, पटौदी, गजेन्द्र चौहान, प्रतिनिधि, जिला परिषद अध्यक्ष, ब्र.कु. जयप्रकाश, ब्र.कु. राजकुमारी, ब्र.कु. राजेन्द्र तथा अन्य।

कथा सरिता

आसक्ति

माहात्मा बुद्ध को लगातार सात दिन तक एक ही आसन पर बैठे साधनारत देख सुजाता बड़ा विस्मित हो रही थी। तभी सामने से एक शव लिए जाते हुए कुछ व्यक्ति दिखाई दिये। उस शव को देखते ही बुद्ध हँसने लगे। सुजाता ने प्रश्न किया - 'योगीराज! कल तक तो आप शव को देखकर दुखी हो जाते थे, आज वह दुख कहाँ चला गया?'

बुद्ध ने कहा - 'बालिके! सुख-दुख मनुष्य की कल्पना मात्र है। कल तक जड़ वस्तुओं में आसक्ति होने के कारण यह भय था कि कहीं यह न छूट जाए, वह न बिछुड़ जाए। यह भय ही दुख का कारण था, आज मैंने जान लिया कि जो जड़ है, उसका तो गुण ही परिवर्तनशील है, पर जिसके लिए दुख करते हैं, वह तो न परिवर्तनशील है, न नाशवान। अब तू ही बता -जो सनातन वस्तु पा ले, उसे नाशवान वस्तुओं का क्या दुख?'

आत्मावलंबन की उपेक्षा व्यक्ति को मंजिल तक पहुंचने नहीं देती है। सर्वांगिण का लक्ष्य समीप होते हुए भी वे अपने इस परम पुरुषार्थ की अवहेलना कर पतन के गर्त में भी जा पहुंचते हैं।

खुशी

एक शहर में बहुत अमीर सेठ रहता था। अत्यधिक धनी होने पर भी वह हमेशा दुखी ही रहता था। एक दिन ज्यादा परेशान होकर वह एक ऋषि के पास गया और अपनी सारी समस्या उन्हें बताई।

ऋषि ने सेठ को कहा कि कल तुम इसी वक्त यहां आना मैं तुम्हारी समस्या का हल बता दूंगा।

अगले दिन सेठ जब आश्रम पहुंचा तो देखा कि ऋषि सड़क पर कुछ ढूँढने में व्यस्त थे।

सेठ ने गुरुजी से पूछा कि महर्षि आप क्या ढूँढ रहे हैं? ऋषि बोले कि मेरी एक अंगूठी गिर गई है उसे ढूँढ रहा हूँ। काफी देर बाद सेठ ने फिर ऋषि से पूछा कि महाराज, आपकी अंगूठी कहाँ गिरी थी? ऋषि ने जवाब दिया कि मेरी अंगूठी मेरे आश्रम में गिरी थी लेकिन अभी वहाँ बहुत अंधेरा है इसलिए यहाँ मैं सड़क पर रोशनी में अंगूठी ढूँढ रहा हूँ।

सेठ ने चौंकते हुए पूछा कि जब आपकी अंगूठी आश्रम में गिरी है तो यहां क्यों ढूँढ रहे हैं? ऋषि ने मुस्कराते हुए कहा कि यही तुम्हारे कल के प्रश्न का उत्तर है। खुशी तो मन के भीतर, आंतरिक प्राप्तिओं के आधार प्राप्त होती है। वह तो मन में छुपी हुई है लेकिन तुम उसे धन में खोजने की कोशिश कर रहे हो। इसलिए तुम दुखी हो। इसे सुनकर सेठ उनके चरणों में गिर पड़ा।

प्रेम का चमत्कार

एक महिला थी, एक दिन प्रातःकाल उसके घर के दरवाजे पर दस्तक हुई, उसने दरवाजा खोला तो देखा की श्वेत दाढ़ी वाले तीन बुजुर्ग उसके दरवाजे पर खड़े हैं। तीनों बुजुर्गों को उस विनम्र महिला ने घर के भीतर आने के लिए आमंत्रित किया। उनमें से एक बोला, 'हम तीनों एक साथ आपके घर नहीं आ सकते। महिला की आंखों में जिज्ञासा देख उस बुजुर्ग ने अपने साथ खड़े दूसरे की ओर संकेत करते हुए कहा, 'ये है धन'। दूसरे बुजुर्ग की ओर इशारा करते हुए कहा, 'ये है सफलता'। और अंत में अपना परिचय दिया, 'मैं प्रेम हूँ'। तब तक बुजुर्ग ने उस महिला से आग्रह किया कि वो घर के भीतर जाए और अपने पति से पूछे कि वो इन तीनों में से किसके अपने घर के अंदर बुलाना चाहते हैं।

वह महिला अंदर गई और अपने पति को सारा हाल कह सुनाया, उसके पति को काफी आनंद का अनुभव हुआ 'अरे वाह! ये तो बड़े सौभाग्य की बात है। पर तीनों में से किसी एक को बुलाना है तो धन को ही बुला लो।' पति ने विचार प्रकट किया। उसकी पत्नी सहमत नहीं थी। 'हमें सफलता को आमंत्रित करना चाहिए।' अचानक बहू आ गई और उसने अपने विचार प्रकट किए, 'मेरे विचार से हमें प्रेम को बुलाना चाहिए, हमारा घर प्रेम से भर जाएगा।'

महिला के पति को यह सुझाव काफी पसंद आया। महिला उल्टे पैर वापिस गई और निवेदन किया कि आपमें से जो भी प्रेम हैं, वो कृपया हमारे घर के भीतर आ जाएं। जैसे ही प्रेम ने दरवाजे के भीतर प्रवेश किया, शेष दोनों भी उसके पीछे हो लिए। यह देखकर महिला आश्चर्यचकित रह गई। यह देखते हुए प्रेम ने कहा, 'अगर तुमने धन या सफलता को आमंत्रित किया होता, तो शेष दोनों चले जाते, लेकिन तुमने प्रेम को चुना और जहां प्रेम है वहां धन और सफलता तो पीछे-पीछे चलती ही है।'

तीन सीखें

एक राजा के तीन पुत्र थे। एक दिन राजा के मन में आया कि पुत्रों को कुछ ऐसी शिक्षा दी जाये कि समय आने पर वो राज-काज सम्भाल सकें।

राजा ने सभी पुत्रों को बुलाकर कहा कि हमारे राज्य में नाशपाती का कोई वृक्ष नहीं है, मैं चाहता हूँ तुम सब चार-चार महीने के अंतराल पर इस वृक्ष की तलाश में जाओ और पता लगाओ कि वो कैसा होता है? राजा की आज्ञा पाकर तीनों पुत्र बारी-बारी से गए और वापिस लौट आए। पहले पुत्र ने लौटकर कहा - 'पिताजी, वह पेड़ तो बिल्कुल टेढ़ा-मेढ़ा और सूखा हुआ था।'

'नहीं, नहीं वह तो बिल्कुल हरा-भरा था, लेकिन शायद उसमें कुछ कमी थी क्योंकि उस पर एक भी फल नहीं लगा था।' दूसरे पुत्र ने पहले को बीच में रोकते हुए कहा।

फिर तीसरा पुत्र बोला - 'भैया, लगता है आप दोनों ही कोई गलत पेड़ देख आये क्योंकि मैंने सचमुच नाशपाती का पेड़ देखा, वो बहुत ही शानदार था और फलों से लदा पड़ा था।'

तीनों पुत्र अपनी-अपनी बात के लिए आपस में विवाद करने लगे। तभी राजा सिंहासन से उठे और बोले - 'पुत्रों! दरअसल तुम तीनों ने अपनी रीति से उस वृक्ष का सही वर्णन किया है। मैंने जानबूझकर तुम्हें अलग-अलग मौसम में वृक्ष खोजने भेजा था और तुमने जो देखा वो उस मौसम के अनुसार था।'

मैं चाहता हूँ कि इस अनुभव के आधार पर तुम तीन बातों को गांठ बांध लो। पहली - किसी चीज के बारे में सही और पूर्ण जानकारी चाहिए तो तुम्हें उसे लम्बे समय तक देखना, परखना चाहिए, फिर चाहे वो कोई विषय हो, वस्तु हो या फिर कोई व्यक्ति ही क्यों न हो।

दूसरा - हर मौसम एक सा नहीं होता, जिस प्रकार वृक्ष मौसम के अनुसार सूखता, हरा-भरा या फलों से लदा रहता है, उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में भी उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, अतः अगर तुम कभी भी बुरे दौर से गुजर रहे हो तो अपनी हिम्मत और धैर्य बनाये रखो, समय अवश्य बदलता है।

और तीसरी बात - अपनी बात को ही सही मानकर अड़े मत रहो, अपना दिमाग खोलो और दूसरों के विचारों को भी जानो। यह संसार ज्ञान से भरा पड़ा है, चाह कर भी तुम अकेले सारा ज्ञान अर्जित नहीं कर सकते, इसलिए भ्रम की स्थिति में किसी ज्ञानी व्यक्ति से सलाह लेने में संकोच मत करो।

दूसरा पहलू

एक चित्रकार था। वह दुनिया के सबसे सुंदर आदमी का चित्र बनाना चाहता था। वह चित्रकार सुंदर आदमी की तलाश में हर जगह भटकता। लेकिन उसे वहां ऐसा कोई मनुष्य नहीं मिला जिसे देखकर लगे कि उसमें समग्र सुंदरता निवास करती है। फिर वह भटकते-भटकते एक पहाड़ी पर पहुंचा। उस पहाड़ी पर एक चरवाहा मस्त होकर, मुग्ध होकर बांसुरी बजा रहा था। उसकी बांसुरी में ऐसा स्वर था कि सारी प्रकृति शांत होकर सुन रही थी, पक्षी बोलना भूल गए थे। सारा वातावरण संगीतमय हो रहा था। जब उस चित्रकार ने उसे देखा तो देखता रह गया। उसके होठों पर बच्चों जैसी अबोध मुस्कान थी। उसकी आंखों से किसी दूर देश की खबर आती थी। उसे देखकर चित्रकार को लगा कि इस आदमी में सचमुच संसार का सबसे सुंदर मासूम चेहरा निवास करता है। उसने उसकी तस्वीर बनाई और वह तस्वीर पूरे संसार में बिकी और मानव जाति को पता लगा कि सच में मनुष्य में परमात्मा निवास करता है।

लेकिन जब पचास साठ साल बाद वह बूढ़ा हो रहा था तो किताबों से उसने पढ़ा कि मनुष्य में शैतान भी निवास करता है। अगर मैं शैतान की तस्वीर नहीं बनाऊंगा तो जीवन का पूरा और सही चित्र प्रस्तुत नहीं कर पाऊंगा। इसलिए वह शैतान की तलाश में निकल पड़ा। वह बड़े-बड़े गंदे स्थानों में गया। घूमते-घूमते वह एक जेलखाने में पहुंचा जहां एक कैदी था जिसमें सारा खून कफ़ था और दो दिन बाद उसे फांसी लगने वाली थी। उसने जब उस कैदी का चेहरा देखा तो वह घबरा गया।

उसने इतना भयानक, कुरूप व वीभत्स चेहरा कभी नहीं देखा। उसने उसकी तस्वीर बनाई और जब तस्वीर बनकर तैयार हो गई तो वह अपनी पहली वाली तस्वीर से तुलना करने लगा कि कला की दृष्टि से वह तस्वीर श्रेष्ठ है या पहले वाली। जब वह दोनों तस्वीरें देख रहा था तो उसे पीछे से रोंने की आवाज सुनाई दी। वह कैदी फूट-फूट कर रो रहा था। चित्रकार ने पूछा कि तुम सात खून करके नहीं रोए। ये तस्वीरें देखकर क्यों रोए? कैदी ने कहा - 'हे चित्रकार, तुझे याद नहीं, आज से पचास वर्ष पूर्व जिसका तुमने चित्र बनाया था वह मैं ही हूँ। चित्रकार यह सुनकर आश्चर्यचकित हो गया। वह बोला - 'आदमी के भीतर ही हैवान और फरिश्ता छुपा है। हैवान और ईसान बनना आदमी के अपने हाथ में है।'



ग्वालियर-म.प्र.। एपिकल्चर युनिवर्सिटी के एच.ओ.डी. व प्रोफेसर्स के लिए 'योगिक खेलों' विषय पर वर्कशॉप करने के पश्चात् समूह चित्र में ब.कु. महेन्द्र, ब.कु. रेखा, ब.कु. तारा तथा ब.कु. प्रहलाद।



हाथरस। 'सात दिवसीय सकारात्मक परिवर्तन शिविर' के समापन अवसर पर कमांडिंग ऑफिसर कर्नल कमल कलीटा ब.कु. शान्ता को सम्मानित करते हुए।



होडल-हरियाणा। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब.कु. ऊषा, ब.कु. शुक्ला, पूर्व विधायक उदयमान जी, एस.डी.एम. सत्यवान इंडोरा तथा अन्य।



झालावाड़। मातेश्वरी जगदम्बा के 49वीं पुण्य स्मृति दिवस पर मातेश्वरी जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए ब.कु. मीना।



दिल्ली-किन्सवे कैम्प। रिट्रीट के पश्चात समूह चित्र में यू.के. के ब.कु. भाई-बहनें तथा ब.कु. साधना।



किन्नोर-हि.प्र.। विश्व की सबसे ऊँचाई वाले गांव 'कोमिक' में ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में ब.कु. सरस्वती, ब.कु. सपना तथा अन्य।

भारत देश विश्व गुरु होने के कारण यहाँ के प्रत्येक रस्म-रिवाज और पर्व में मनुष्य को सशक्त करने तथा एक ऐसा समाज बनाने के प्रयास का भाव होता है जहाँ मनुष्य शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक और सामाजिक रूप से खुशहाल और सुन्दर जीवन बना सके। इन पर्वों और रीति, रस्म, रिवाजों में रक्षाबन्धन का पर्व धागे का है, परंतु बहुत शक्तिशाली है।

रक्षाबन्धन का पर्व श्रावण मास में पूर्णिमा के समय मनाया जाता है। पूर्णिमा अर्थात् चन्द्रमा का सम्पूर्ण रूप। श्रावण मास को वैसे भी परमात्मा शिव का मास मानते हैं। जिसमें भगवान भोलेनाथ की विभिन्न रूपों में पूजा की जाती है। वैसे तो यह पर्व आज के संदर्भ में भाई-बहन तक ही सीमित हो गया है। परंतु यदि इसके अतीत पर नजर डाली जाए तो इसका प्रारंभ भाई-बहन से न होकर सर्व मनुष्यात्माओं को आसुरी वृत्तियों से मुक्त कराने के प्रतीक के रूप में होता है। वास्तव में मनुष्य को विकारों, आसुरी संस्कारों तथा विचारों से मुक्त होने के लिए पवित्रता के बल की आवश्यकता होती है। जब मनुष्य पवित्रता को छोड़ अपवित्रता की राह पर चल पड़ता है तब उसे अनेक कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आत्मा की असली ताकत उसकी पवित्रता है इसलिए पवित्रता के सागर परमपिता परमात्मा शिव के मास में इस पर्व की महत्ता का वर्णन है।

राखी के संदर्भ में बात की जाये तो आज इसका रूप बदलकर पाश्चात्य देशों के

रक्षाबंधन



प्रभाव और संस्कृति के कारण केवल परंपरा के रूप में मनाये जाने तक रह गया है। तरह-तरह की विभिन्न प्रकार की सजी-सजाई फैशनबल राखियों को भाई की कलाई में बांधकर अपनी परंपरा पूरी कर लेते हैं। जबकि प्रारंभ में जब इसकी शुरुआत हुई तो जब पुरुष युद्धभूमि में जाते थे तब उनकी धर्मपत्नियों रक्षाबंधन बांधकर तथा माथे पर तिलक लगाकर उनके विजयी होने की कामना करती थीं। इसके बाद ब्राह्मण भी केवल एक पीला धागा अपने यजमानों को बांधते थे जिसे रक्षासूत्र कहा जाता था। वह अब भी कहीं-कहीं प्रचलित है। जब मनुष्य मंदिरों में जाते हैं या कोई अनुष्ठान कराते हैं तब ब्राह्मण अथवा पुजारी हाथ में रक्षासूत्र बांधता है तथा

आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा रक्षा करने की कामना करता है। यदि यह रक्षाबंधन केवल भाई-बहनों तक ही सीमित था तब असुरों और देवताओं के युद्ध में इन्द्राणी ने इन्द्र को रक्षाबंधन क्यों बांधा था जबकि वे तो पति-पत्नी थे। अथवा ब्राह्मण यजमानों को रक्षासूत्र क्यों बांधते थे? इसके बारे में आज प्रत्येक व्यक्ति को सोचने की आवश्यकता है।

रक्षाबंधन की आध्यात्मिक व्याख्या:

रक्षाबंधन का अर्थ ही होता है रक्षा के लिए बंधन। हालांकि बंधन किसी को भी प्रिय नहीं होता है। परंतु इसका अर्थ है आसुरी प्रवृत्तियों से रक्षा के लिए मर्यादाओं के बंधन में बंधना, जिसके कारण हमें कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वास्तव में यह बंधन नहीं स्वतंत्रता है क्योंकि जो व्यक्ति आसुरी शक्तियों से मुक्त है वह इस दुनिया में सबसे स्वतंत्र है। मनुष्यों की आसुरी शक्तियों से रक्षा करना तथा दैवी शक्तियों का आह्वान करना ही इस रक्षाबंधन का उद्देश्य है। रक्षाबंधन का प्रारंभ यदि ईश्वरीय संदर्भ में देखा जाए तो श्रावण मास परमात्मा शिव का मास माना जाता है। इसका अर्थ यही है कि स्वयं परमात्मा ने इसका -शेष पेज 5 पर



हैदराबाद। आ.प्र. के माननीय मुख्यमंत्री श्री चंद्रबाबू नायडू को अभिनंदन पत्र भेंट करते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय, माउण्ट आबू तथा अन्य।



नवापारा-राजिम। कृषिमंत्री बृजमोहन जी ब्र.कु. नारायण को मोमेट्टो प्रदान करते हुए। साथ ही ब्र.कु. पुष्पा।



हरिद्वार। 'अलविदा तनाव' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए महन्त सुन्दरदास जी महाराज, मानस मंदिर, कनखल, ब्र.कु. मोना, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।



भैरहवा-नेपाल। आध्यात्मिक कार्यक्रम के अंतर्गत सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. भूपेन्द्र। साथ ही सभासद एवं पूर्व मंत्री दीपक वोहरा, पूर्व मेयर सागर प्रताप राणा, ब्र.कु. शान्ति तथा अन्य।



गोपाल नगर-कटनी(म.प्र.)। 'नारी सुरक्षा अपनी सुरक्षा' अभियान के उद्घाटन अवसर पर नारियों के सम्मान के पश्चात् अपने विचार व्यक्त करते हुए सरावगी कॉलेज की प्रिंसिपल पाण्डे बहन। साथ ही वाणिज्य कर अधिकारी, महापौर रुक्मिणी वर्मन तथा ब्र.कु. भगवती।



मनाली-हि.प्र.। 'मेरा भारत व्यसनमुक्त भारत' राष्ट्रीय अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधायक गोविंद सिंह ठाकुर, तहसीलदार पद्मा शेरिंग, ब्र.कु. संध्या, अभियान प्रभारी डॉ. सचिन, डॉ. डोनािका, डॉ. पुष्पा पाण्डेय व अन्य।

आपने ऐसे भी चित्र देखे होंगे जिनमें कि श्रीकृष्ण को सागर में तैरते हुए पीपल के पत्ते पर चित्रित किया गया होता है। इस विषय में यह भी उल्लेख

है कि "सृष्टि के आदि काल में श्रीकृष्ण को पीपल के पत्ते पर देखा गया।" वास्तव में उस चित्र का भी भाव यही है कि श्रीकृष्ण ने सतयुग के आरंभ में जन्म लिया था। आप जानते हैं कि संसार को 'सागर' भी कहा जाता है। इस संसार रूपी सागर अर्थात् असौम्य लोक में मनुष्य सृष्टि मानो पीपल (अश्वत्थ) का एक वृक्ष है। ब्रह्मा और सरस्वती उसकी मूल हैं और श्रीकृष्ण उसके पत्ते पर तैर रहे हैं अर्थात् इससे अलिप्त और न्यारे होकर उन्होंने इसमें जीवन व्यतीत किया। वे इस सृष्टि के सबसे पहले पत्ते हैं अर्थात् उनका जन्म सृष्टि के प्रारंभ में ही हुआ। "अर्थात् श्रीकृष्ण को सृष्टि के आरंभ में पीपल के पत्ते पर तैरते हुए देखा गया" - इस कथन का अर्थ यह हुआ कि श्रीकृष्ण सतयुग के आदि काल में हुए।

जीवनमुक्त होने के कारण श्रीकृष्ण का जन्म सतयुग में हुआ

श्रीकृष्ण जीवनमुक्त थे। उन्हें जीवनबन्ध अवस्था वाला तो कोई भी नहीं मानेगा। कोई भी मनुष्य यह नहीं कह सकता कि श्रीकृष्ण पर पूर्व जन्मों के किन्हीं विकर्मों का बोझ था अथवा कि उनमें मनसा, वाचा या कर्मणा किसी प्रकार की कुछ भी अपवित्रता थी। बल्कि सभी यह कहेंगे कि श्रीकृष्ण मानसिक विकारों तथा विकर्मों से पूर्णतः मुक्त थे और श्रेष्ठ भाग्य वाले थे अर्थात् उन्हें पवित्रता (धर्म), धन-धान्य (अर्थ), दीर्घ आयु, निरोगी काया आदि सर्व सुख तथा विकर्मों के बन्धन से मुक्ति पूर्णतः प्राप्त थी। वे सतो गुण की प्रशानता की भी पराकाष्ठा को प्राप्त थे। अतः उस सर्वोच्च प्रारब्ध को भोगने के लिए उनका जन्म ऐसे ही लोक में होना आवश्यक था जहाँ

श्रीकृष्ण कब आते हैं?



कभी भी अधर्म (काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार), दुःख (गर्भ-जेल, रोग, अकाले मृत्यु, निर्धनता आदि), और अशान्ति (लड़ाई, झगड़ा, मतभेद, द्वेष, कलह आदि), प्राकृतिक आपदाएँ (अति वर्षा, भूकम्प आदि) तथा तमोगुण आदि का नाम-निशान भी न होता हो, जहाँ कानों में कोई भी अपशब्द या अशुभ समाचार का शब्द न पड़े, जहाँ न शोक हो, न शोक की कोई सूचना और जहाँ कोई भी दुर्व्यवहार, पापाचार, अत्याचार, विकार इत्यादि दिखाई न देते हों। ऐसा लोक तो सतयुगी लोक ही था क्योंकि सतयुग में ही प्रकृति में भी सतो गुण प्रधान था, सभी मनुष्य भी दिव्य गुण सम्पन्न थे और धन-वैभव भी सभी प्राप्त थे। अतः श्रीकृष्ण का जन्म सतयुग में ही हुआ। इसलिए शास्त्रवादी लोग भी कहते हैं कि श्रीकृष्ण अथवा श्रीनारायण ने सृष्टि के आदि में राजा पृथु के रूप में जन्म लिया और उसने पृथ्वी रूथी गौ को दुहा और इससे सभी

वैभव तथा पदार्थ प्राप्त किये। कहने का भाव यह है कि उन्होंने सारी पृथ्वी पर अटल-अखण्ड और निर्विघ्न राज्य किया तथा सर्वोत्तम प्रारब्ध को भोगा था।

'क्षीर सागर के अर्थ के स्पष्टीकरण से भी यही सत्यता सिद्ध है'

आपने देखा होगा कि भारत में ऐसे भी चित्र उपलब्ध हैं और ऐसा भी वर्णन तथा उल्लेख मिलता है जिनमें कि श्रीनारायण, को क्षीर सागर में शेषनाग पर लेटा हुआ अंकित किया गया होता है। इस चित्र का भी अर्थ यही होता है कि श्रीकृष्ण सतयुग के आदि में हुए थे क्योंकि वास्तव में दूध को अति पवित्र वस्तु माना गया है और दूध खुशहाली तथा सम्पन्नता का भी प्रतीक है और 'सागर' शब्द बहुतायत का भी वाचक है और पवित्रता तथा धन-धान्य की बहुतायत तो सतयुग में ही थी। आप जानते हैं कि जब कोई वस्तु अधिक होती है तो मुहावरे में कहा जाता है कि फलों वस्तु का तो यहाँ सागर है। अतः 'क्षीर सागर' या 'दूध का सागर' सम्पूर्ण पवित्रता तथा सुख-समृद्धि का बोधक है और सागर में शेषनाग पर निश्चित भाव से लेटना, चित्रकार की भाषा में इस सत्यता का संकेतक है कि श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण सतयुग के सुखकाल में हुए और उनका राज्य निर्विघ्न, निष्कटक और अति सुखकारी था। उसमें कोई भी वैरी, कोई भी शत्रु या कोई हिंसक न था। स्पष्ट है कि इन सभी रहस्यों को जानते हुए भी यह कहना कि "श्री राधे और श्री कृष्ण, जो स्वयंवर के बाद 'श्रीलक्ष्मी' और 'श्रीनारायण' कहलाये, द्वापरयुग में हुए" भूल है और श्रीकृष्ण को ग्लानि करने के तुल्य है।

अरावली की श्रृंखला में खूबसूरत प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर ज्ञानसरोवर परिसर में चार दिवसीय सम्मेलन में प्रकृति व मानसिक नियमन से बने नये आयाम 'यौगिक खेती' पर हुआ मंथन। सबने माना, समय की मांग 'यौगिक खेती' द्वारा स्वस्थ परंपराओं का बढावा।

ज्ञानसरोवर। प्रकृति मानव की सभी आवश्यकताओं को नियमानुसार पूरा करने में सक्षम है, बशर्ते प्राकृतिक नियमों के अनुरूप ही मानव उनका सदुपयोग करे। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज के प्रामोण विस्तार सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सेमिनार में महाराष्ट्र कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान परिषद के महानिदेशक मारूति सावंत ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग करने से बिगड़ता पर्यावरण संतुलन सबके लिए चिंता का विषय बन गया है। कृषि पर निर्भर रहने वाले गांव-वासियों को विकास के कठोर कदम उठाते हुए रासायनिक खादों का उपयोग बंद कर यौगिक खेती के माध्यम से कृषि उपज बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए।

वर्तमान प्रामोण जीवन शैली को भी पाश्चात्य संस्कृति का ग्रहण लग चुका है। गांववासियों को अपनी प्राचीन भारतीय संस्कृति व सभ्यता को नहीं भूलना चाहिए।

ब्र. कु. मृत्युंजय शिक्षा प्रभाग उपाध्यक्ष ने कहा कि भौतिकता की चकाचौंध के बावजूद अस्थायित्व को जीवन में स्थान दिए जाने की जरूरत है। जैविक खादों के प्रयोग से अनाज की पौष्टिकता भी उच्च गुणवत्ता वाली होती है।

हरनाथ जगावत, एन.एम.सदगुरु फाउण्डेशन निदेशक, दाहोद ने कहा कि रासायनिक खादों के प्रयोग से कैसर जैसी व्याधियों में वृद्धि हो रही है। चरित्रवान किसान आध्यात्मिकता के जरिए प्राचीन कृषि व्यवस्था के अनुरूप कृषि गतिविधियों को बढ़ावा दे सकता है। देश

प्रकृति के नियमों का करें सदुपयोग



ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए मारूति सावंत, हरनाथ जगावत, ब्र. कु. मृत्युंजय, ब्र. कु. गीता, ब्र. कु. सरला, ब्र. कु. राजेन्द्र, ब्र. कु. ममता, ब्र. कु. रानी, ब्र. कु. राजू तथा अन्य।

में सबकुछ है, लेकिन एकता की कमी के चलते विकास की योजनाओं को मूर्तरूप देने में देरी लग जाती है।

प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र. कु. सरला ने कहा कि गांवों की शांभा मेहनतकर्ता गांववासियों का जीवन नैतिकता जैसे जीवनोपयोगी मूल्यों से संपन्न होना जरूरी है। मुख्यालय

संयोजक ब्र. कु. राजू ने कहा कि गांवों के सर्वांगीण विकास के लिए ग्रामवासियों को एकता के साथ आपसी सद्भाव, प्रेम, सुख, शान्ति आदि मूल्यों को महत्व देकर भारत को स्वर्णिम बनाने की संकल्पना को साकार करने के लिए आगे आना चाहिए। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र. कु. रानी ने कहा कि श्रेष्ठ संस्कारवान व्यक्ति

का निर्माण स्वर्णिम ग्राम्य भारत निर्माण का आधार है। अध्यात्मवाद ही समाज को कुशल दिशा-निर्देश प्रदान कर बुराइयों से मनुष्य को मुक्त कर सकने की मनोस्थिति तैयार कर सकता है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत ब्र. कु. ममता, ब्र. कु. गीता, अधिशासी सदस्य राजेन्द्र भाई आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

मलेशिया में हुआ भव्य एशिया रिट्रीट का निर्माण

एक सौ पैंतीस से अधिक देशों में राजयोग केन्द्र संचालित करके संयुक्त राष्ट्र संघ के स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के अभियान को गति दे रही ब्रह्माकुमारी संस्था ने अब मलेशिया में विशाल एशिया रिट्रीट सेंटर की स्थापना की है। स्थानीय केन्द्र द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार इस रिट्रीट सेंटर का उद्घाटन ब्र. कु. डॉ.

निर्मला, निदेशिका, ज्ञानसरोवर ने भव्य समारोह में किया। इस अवसर पर मलेशिया का सुप्रसिद्ध शेर नृत्य प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात् श्रीफल अर्पित करते हुए डॉ. निर्मला ने ब्र. कु. चार्ली, ब्र. कु. लेचु तथा ब्र. कु. मीरा की दिव्य उपस्थिति में विधिवत उद्घाटन रसम अदा की।



इस अवसर पर एशिया पैसैफिक रिट्रीट का आयोजन भी किया गया जिसमें 14 देशों के प्रतिनिधियों ने 5 दिन तक आध्यात्मिकता, स्थिरता व सद्भावना विषय पर विचार विमर्श करते हुए दुनिया में सुख शान्ति स्थापित करने की कामना की गई। एशिया रिट्रीट सेंटर तीन ब्लॉकों के रूप में स्थापित है, मुख्य ब्लॉक में विशेष रूप से मीडिया कर्मियों व बच्चों के लिए अलग कमरे बनाए गए हैं, जबकि राजयोग अभ्यास के लिए विशाल हॉल का निर्माण किया गया है जिसमें 1500 लोगों के बैठने की व्यवस्था है। इस अवसर पर भजे संदेश में संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी व संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी गुलज़ार ने कहा कि पूरे एशिया में इस केन्द्र की महक महसूस की जाएगी।



ओ. आर. सी.। कार्यक्रम में सभी को सम्बोधित करते हुए माननीय मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी तथा राजयोग की गहन अनुभूति कराते हुए ब्र. कु. रंजना।

ओ. आर. सी.। ब्राह्मणों ने इस देश में स्वतंत्रता संग्राम से लेकर राजनीतिक एवं सामाजिक निर्माण के हर कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उक्त उद्गार ओ. आर. सी. में ब्राह्मण समाज द्वारा परशुराम जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि इस देश के उत्थान में ब्राह्मणों का कार्य सराहनीय रहा है।

डॉ. सी. पी. जोशी ने भी ब्राह्मणों को आगे आकर समाज हित में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि ब्राह्मण अपनी श्रेष्ठ शक्तियों के द्वारा इस समाज का परिवर्तन कर सकते हैं।

ब्र. कु. रंजनी ने सभी को आत्मा के मूल स्वरूप का परिचय देते हुए कहा कि आज मानव के सबसे बड़े दुःख का कारण स्वयं को न जानना एवं कथनी-करनी में महान अंतर होना है। उन्होंने कहा कि मानव इन्द्रियों के गुलाम होने के कारण हमेशा असन्तुष्टता एवं अशान्ति का अनुभव करता रहता है। अगर हम जीवन में

सच्चा सुख एवं शान्ति का अनुभव करना चाहते हैं तो स्वयं के भीतर जाकर अपने आपको पहचानें। शान्ति वास्तव में हमारा स्वयं का स्वधर्म है, जितना हम अपने आंतरिक स्वरूप का अनुभव करते हैं, हमारा मन स्वतः ही शान्त होने लगता है।

ब्र. कु. रंजना ने सभी को राजयोग के गहन अभ्यास के द्वारा आत्मिक स्थिति का अनुभव कराया। इस कार्यक्रम में हरियाणा के कई जिलों के ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष, पुरोहित एवं विप्रजन उपस्थित थे। वृन्दावन से आये 105 पण्डितों के द्वारा परशुराम पूजन से कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ।

इस अवसर पर हरियाणा के प्रसिद्ध हास्यकवि अरुण जैमिनी, कवि महेंद्र शर्मा एवं युसूफ भारद्वाज ने हास्य रचनाओं से सभी का मनोरंजन किया। गीत, संगीत एवं नृत्य के माध्यम से भी कलाकारों ने सबका मन मोह लिया। ब्राह्मण समाज के प्रतिभाशाली युवाओं को मुख्यमंत्री द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में 1500 से भी अधिक लोगों ने भाग लिया।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र. कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510

सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, www.omshantimedia@bkiiv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/12-14, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 4th July 2014

संपादक: ब्र. कु. गंगाधर, प्रकाशक: ब्र. कु. करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज मीडिया प्रभाग (आर.ई. आर.एफ.) के लिए प्रकाशित एवं डी. वी. प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।